



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth In Public Interest

19-20वां

संयुक्तांक



लेखा संगम



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक्दारी)-प्रथम
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक्दारी)-द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



केवल विभागीय वितरण हेतु

19-20वां संयुक्तांक



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth In Public Interest

हिंदी पत्रिका

लेखा संगम

जनवरी 2022 से दिसंबर 2022

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

लेखा संगम परिवार

संरक्षक

श्री राम हित

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री अभिषेक सिंह

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

परामर्शदाता

श्री राजेंद्र कुमार खरे

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)—प्रथम एवं द्वितीय

संपादक

सुश्री साधना राय

हिंदी अधिकारी

सह—संपादक

सुश्री शिप्रा सिंह

हिंदी अधिकारी

सहायक संपादक

श्री अमीन अली

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री लोकेश चंद्र लाल

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सहयोग

सुश्री प्रज्ञा

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मूल्य : निःशुल्क (राजभाषा हिंदी को समर्पित)

कुल पृष्ठ : 72

(नोट : लेखकीय विचारों से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है)

अनुक्रमणिका

पद्य



क्र. सं.	रचना का नाम	लेखक	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
01	जिजीविषा	डॉ० नमिता चंद्रा	सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	11
02	पृथ्वीराज महाराज	श्री चंचल कुमार तिवारी	सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	13
03	उड़ान..अपने आसमां को पाने को	श्री नीरज भाटिया	सहायक लेखाधिकारी/लेखा-द्वितीय	21
04	तिरंगा	श्री अंकित निगम	सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	23
05	राम की व्याकुलता	श्री प्रत्यूष अवस्थी	सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	25
06	अनंत की खोज	श्री दीप कुमार शुक्ल	सहायक पर्यवेक्षक/लेखा-द्वितीय	27
07	मेरा सलाम, मेरा प्रणाम	श्री अनुराग निषाद	पुत्र- श्री अनिल कुमार लेखाकार/लेखा-प्रथम	28
08	बेटी	मो० अरमान	सहायक लेखाधिकारी/लेखा-द्वितीय	30
09	गज़ल	श्री राजीव सिंह	सहायक पर्यवेक्षक/लेखा-द्वितीय	31
10	लड़कों की जिंदगी	श्री शिवम कुमार	लेखाकार/लेखा-प्रथम	32

लेखा संगम

अनुक्रमणिका

गद्य



क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
11	चिराग तू जला करे....	श्री यश मालवीय पर्यवेक्षक (सेवानिवृत्त)/लेखा-प्रथम	35
12	सर्प संकट....	सुश्री साधना राय हिंदी अधिकारी/लेखा-प्रथम	39
13	अविश्वास	श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव पत्नी- श्री लोकेश चंद्र लाल कनि. हिंदी अनुवादक/लेखा-प्रथम	49
14	मेरे प्यारे छंगा चाचा	सुश्री स्वाती वर्मा सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम	54
15	संस्मरण	श्री शशांक त्रिवेदी लेखाकार/लेखा-प्रथम	57
16	सरपंच काका	श्री अमीन अली कनि. हिंदी अनुवादक/लेखा-प्रथम	61
17	आयुर्वेद और स्वास्थ्य	श्री सतीश राय वरि. लेखाकार/लेखा-द्वितीय	65
18	भारतीय समाज में विलुप्त होते रिश्ते	श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा वरि. लेखाकार/लेखा-प्रथम	67
19	मेरी जिंदगी के कुछ पल	सुश्री आकृति कुशवाहा पुत्री- श्री अनूप कुमार वरि. लेखाकार/लेखा-प्रथम	69

लेखा संगम



संदेश

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में राजभाषा गृह पत्रिका 'लेखा संगम' के 19-20वें संयुक्तांक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

पत्रिका की महत्ता को देखते हुए पत्रिका को आकर्षक, सुंदर एवं सार्थक बनाने का प्रयास किया गया है। पत्रिका के माध्यम से सभी रचनाकारों की लेखन प्रतिभा तथा राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा अभिव्यक्त होती है।

कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएँ राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने तथा कार्यालय के कार्मिकों के भावों की अभिव्यक्ति के साथ उनके सृजनात्मक प्रतिभा को भी मुखरित होने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करने में अहम् भूमिका निभा रही हैं जिससे कार्मिकों में हिंदी के प्रति स्नेह, लगाव व रूचि पैदा होती है तथा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा मिलता है। हमारे कार्यालय की पत्रिका 'लेखा संगम' भी विविध रचनाओं के साथ न केवल ज्ञान एवं रोचकता प्रदान कर रही है, बल्कि गृह मंत्रालय एवं मुख्यालय के निर्देशों का पालन करती हुई, हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान हेतु मैं समस्त रचनाकारों व सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(राम हित)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' के 19-20वें अंक का प्रकाशन करते हुये अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की लेखनी के माध्यम से दिया गया योगदान सराहनीय है। रचनाएँ अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ भाषा में पकड़ को भी मजबूत बनाती हैं। हमारी गृह पत्रिका ने निःसंदेह कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रयोग में सतत वृद्धि एवं हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पूर्ण विश्वास है कि आगे भी यह क्रम जारी रहेगा। मैं रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी अतुलनीय निष्ठा के लिए और संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु हृदय से धन्यवाद के साथ-साथ पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ देता हूँ।

(अभिषेक सिंह)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संपादक की कलम से...



प्रिय पाठकों....

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सभी प्रबुद्ध पाठकों को मेरा प्रणाम । इस कार्यालय की गृह पत्रिका “लेखा संगम” के प्रकाशन पर अत्यंत हर्ष का अनुभव होता है और सही कहें तो हर्ष से भी कहीं अधिक गौरव का अनुभव होता है कि हमने, एक कार्यालय परिवार के रूप में राजभाषा हिंदी की प्रगति में अपना योगदान दिया है।

हिंदी, इस देश के प्रत्येक जन मानस के हृदय में किसी न किसी रूप में विराजमान है और पत्रिका “लेखा संगम” के माध्यम से उनके व्यक्तिगत विचारों/भावों को भाषा प्रदान करने का प्रयास है। इस पत्रिका में हमने हर तरह के विषयों को समाहित करने का प्रयास किया किया है एवं हर वर्ग के कार्मिकों ने राजभाषा हिंदी की सेवा में अपना योगदान दिया है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का मंत्र कार्यालयीन हिंदी और जन मानस की हिंदी के बीच के भेद को मिटाना है जिससे कि कार्यालयीन हिंदी की जटिलता समाप्त हो सके और प्रत्येक भारतवासी हेतु आसान भाषा बन सके। पत्रिका के माध्यम से हमने भारत सरकार की इस नीति को कार्यान्वित करने का प्रयास किया है और आप देख सकेंगे कि इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की भाषा काफी सरल और बोधगम्य है।

पत्रिका के सफल व निरंतर प्रकाशन हेतु पूरे कार्यालय परिवार को असंख्य धन्यवाद। आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि पत्रिका हर मायने में पाठकों को पसंद आएगी। पत्रिका को और अधिक रुचिकर बनाने हेतु आप के अमूल्य विचार अवश्य साझा करें।

॥ जय हिंद, जय हिंदी ॥

साधना राय

(साधना राय)
संपादक

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग,
कोलकाता - 700 001



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agawestbengal@icag.gov.in

संख्या: हिं.टी. 445/हिं.टी. पत्रिका/संगम/194
दिनांक: 20.10.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश
प्रयागराज

विषय: कार्यालयीन राजभाषा ई-पत्रिका "लेखा संगम" के 17-18वें संयुक्तों की पावती।

महोदय,

यह क्रमांक: हि.अ./लेखा संगम/17-18वां संयुक्त/61835 दिनांक: 13.10.2022 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिन्दी ई-पत्रिका "लेखा संगम" के 17-18वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। साप्ताहिक पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं अन्तर्गत साज - सज्जत सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में सम्बन्धित सभी रचनाएँ जनसर्वक, वैज्ञानिक एवं पठनीय हैं। विशेष रूप से सुभी आकृति कुसुमा द्वारा लिखा गया लेख "शिक्षा में सुधार: सभी बच्चों का अधिकार", श्री चंचल कुमार तिवारी द्वारा लिखा गया कविता "अंतिम पथ", श्री शिवम कुमार द्वारा लिखा गया कविता "जीन" एवं श्री अनुराग निषाद द्वारा लिखा गया कविता "धन्य है काजल मुरसरिल" बहुत सुंदर एवं पठनीय हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन से हमारे कार्यालय द्वारा प्रेषित गए पावती का भी उपयोग किया गया है इसके लिए पुनः साधुवाद। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकर्ता एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए धन्यवाद एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

सं. 10/10/22
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिं.टी)



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल
Indian Audit And Accounts Department
Principal Accountant General (A&E), West Bengal

संख्या: No. पत्रा. हिंटी लेखापत्रिका/2022-23/148

दिनांक: Dated. 07/11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा (हिं.टी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम, उत्तर प्रदेश
20, सराजिनी मण्डल मार्ग
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद - 211 001

विषय: कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" के सत्रहवें - अठारहवें संयुक्तों की पावती एवं अंतिमता।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा गृह-पत्रिका "लेखा संगम" के सत्रहवें - अठारहवें संयुक्तों की ई-प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के आवरण-पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं अन्य विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे हैं। पत्रिका में सम्बन्धित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, जनसर्वक एवं संग्रहीत हैं। विशेषकर श्री राधाकृष्ण का संस्मरण "साक्षात्" इदंश्रुत लगे। श्री विकास जायसवाल की कविता "जब मैं पॉजिटिव हुआ" में कोरोना काल में संक्रमितों की पीड़ा और डर को बखूबी उजागर करती है। सुभी पुष्पा मिश्र की कविता "साध्वी", श्री चंचल कुमार तिवारी की कविता "अंतिम पथ", सुभी ममता श्रीवास्तव की कविता "मैं का घर", श्री वीरेंद्र कुमार शर्मा की कविता "साक्षात्" आदि रचनाएँ अत्यन्त ही सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं संकलन हेतु संपादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(चन्दन कुमार बड़ई)
हिन्दी अधिकारी/प्रशा. हिं.टी सेवा

ट्रेजरी बिल्डिंग, 2, गवर्नमेंट प्लेस, वेस्ट, कोलकाता - 700 001
Treasury Buildings, 2, Government Place West, Kolkata - 700 001
Phone: (033) 2213 8000, Fax: (033) 2248-7849
e-mail: agawestbengal@icag.gov.in Web Site: http://agw.bengal.icag.gov.in



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पंजाब एवं यू.टी.,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(A&E) PUNJAB & U.T., CHANDIGARH-160017
फोन: 0172-2702174, फैक्स 0172-2703110
संख्यांक: हिं.टी. का.अ./अ.अ.पत्रिका/हि.प./2022-23/1477
दिनांक: 19-10-2022

सेवा में

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
20 एस.एन. मार्ग
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज - 211001

विषय: कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 17-18 वें संयुक्तों की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" का 17-18 वें संयुक्तों प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री चंचल कुमार तिवारी की "अंतिम पथ", एवं श्री अंकित निगम की "कान्हा! फिर से आना होगा", रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय

हिन्दी अधिकारी



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

सं. हिं.टी. अनुभाग/पत्रिका-19/2022-23/109
दिनांक: 2-10-2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज - 211002
ई-मेल: sadhanar.ery@icag.gov.in

विषय: हिन्दी गृह-पत्रिका "लेखा-संगम" के 17-18 वें संस्करण के प्रतिभाषा प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह-पत्रिका "लेखा-संगम" के 17-18 वें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्बन्धित सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं जनसर्वक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बखूबी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, श्री वरुण मालवीय की रचना "चारित्र्य का इंतजार", श्री लोकेश चंद्र त्रिवेदी की रचना "मूल मंत्र", श्री रमेश चंद्र की रचना "स्वायं और परमायं", श्री सतीश राय की रचना "पारिवारिक मूल्य एवं स्वास्थ्य जीवन", श्री विकास जायसवाल की रचना "जब मैं पॉजिटिव हुआ", श्री राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव की रचना "शिक्षा में सुधार: सभी बच्चों का अधिकार", श्री चंचल कुमार तिवारी की रचना "अंतिमपथ", श्री नीरज भाटिया की रचना "कविताएँ", सुभी पुष्पा मिश्र की रचना "साध्वी", सुभी आकृति कुसुमा की रचना "शिक्षा में सुधार: सभी बच्चों का अधिकार", श्री चंचल कुमार तिवारी की रचना "अंतिमपथ", श्री नीरज भाटिया की रचना "कविताएँ", सुभी पुष्पा मिश्र की रचना "साध्वी", श्री राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव की रचना "जीन", सुभी प्रीति श्रीवास्तव की रचना "देवकी और यशोदा", श्री अनुराग निषाद की रचना "धन्य है काजल मुरसरिल", श्री रवींद्र कुमार शर्मा की रचना "साक्षात्", आदि रचनाएँ विशेष रूप से ध्यानकर्षित करती हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर सुसूत्री भाग का चित्र बहुत सुंदर है जो पत्रिका के मुख पृष्ठ को आकर्षक बनाता है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बधाई-बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इसकी शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिं.टी

लेखा संगम

पद्य संगम



जिजीविषा



डॉ. नमिता चंद्रा
सहायक लेखाधिकारी

नदिया की तेज धार में
वह नन्हा सा जीव ,
ले सहारा एक पत्ते का
कर रहा था अथक प्रयास ।
प्रयासरत था बस बचा ले
जीवन अपना इस धारा में ।
स्तब्ध कर देती है
उसकी यह जिजीविषा ।

उम्र के आठवें दशक में,
झुकी हुई कमर, भूखा पेट ।
कूड़े के ढेर में देख रोटी,
हर्षित हो दौड़ा उस तरफ
बचाने को जीवन अपना ।
धो उन रोटियों को नल के नीचे,
खा कर बुझाई पेट की आग ।
हृदय को द्रवित कर गई
सांध्य बेला में उसकी यह जिजीविषा ।



बिन माँ का वह मृग छौना
आँखों के आँसू भी न सूखे थे।
भूखा, निढाल पड़ा धरा पर।
पा आहट उस हिंसक की,
तुरंत हुआ सचेत वह।
लगा पूरी ताकत, भागा अपनी सुरक्षा में,
हौंसला दे गई सबको
उसकी यह जिजीविषा।



हादसा था बेहद भयानक
ट्रेन की सीट के नीचे थी दबी वह,
दर्द से अधमरी, सामने था पति का शव,
जुबान भी साथ न दे रही थी।
अचानक देख रोशनी चिल्ला उठी
मदद को "बचाओ... मैं ज़िंदा हूँ"।
पाषाण को भी पिघला गई
उस अभागी की जिजीविषा।



पृथ्वीराज महाराज



श्री चंचल कुमार तिवारी
सहायक लेखाधिकारी

साक्षी है इस देश की मिट्टी,
और जीवंत इतिहास सारा,
जन्मा एक ऐसा भरतवंशी,
जिसने एक बाण चला अद्भुत,
गौरी को मौत के घाट उतारा,
है वैभवशाली देश की रीत सदा,
जन्मते विलक्षण वीर सपूत यहाँ,
जब—जब संकट, विपदा हो जन पर भारी,
आते इस धरा पर,
पृथ्वी सा भरण—तरण को,
आते महावीर पृथ्वीराज, अतुलित बलशाली,
एक समय जब आया आक्रांता गौरी,
साथ लिए सपना विजय की,
स्वयं को मान बैठा अजेय,
जब भेजा दूत साथ यह संदेशा,
चौहान मेरा सामंत बन जाओ,
या हो बाहुबल तो रण में आओ,
इतना सुन वचन दूत के,
उबाल पृथ्वीराज के रक्त में आया,
तत्क्षण मयान से निकल खड़ग,
दूत के शीश पर आया,
सहसा राजधर्म की मर्यादा ने रोका,
तब महाराज ने बोला,





दूत मान तुझे जीवन देता हूँ,
जा, अपने स्वामी से मेरा यह संदेशा कहना,
यह धरती नहीं अपितु हमारी माता है,
सर्वस्व अपना दाव पर लगाएंगे
आएगी यदि आँच अस्मिता पर,
तो धैर्य नहीं, पुरुषार्थ दिखलाएंगे,
बढ़ा यदि पग एक इंच इस ओर,
फिर रण कौशल ऐसा हम दिखलाएंगे,
एक-एक को सौ से लड़ाएंगे,
तब न बचेगा शेष कुछ,
कीर्तिहीन अवश्य गौरी हो जायेगा,

लौटा दूत भयभीत हो, संदेशा लाया
यथावत महाराज की वाणी सुनाया,
सुन दूत की वाणी,
दुष्ट गौरी मंद-मंद मुस्काया,
मारे अभिमान अपने मिथ्या शक्ति के,
जब कूच अपनी सेना रणभूमि को आया,
तब महाराज ने चीर स्मरणीय रण कौशल दिखलाया,
जो था अभेद्य, सुभेद्य बनाया,
कभी पवन वेग सा तीर चलाया,
तो कभी भाले को रक्त से नहलाया,
मिनटों में दुष्टों को धूल चटाया,
एक भाला शक्ति से फेंका
गिरा गौरी धम्म से,
महाराज के चरणों में आया,
जब उठी तलवार, कहकर भवानी,
माँगा जीवन की भीख, हाथ फैलाया,



शरणागत वत्सल ने दया दिखाई,
 कलंकित होकर गजनी अपने देश को आया,
 लौटें जब युद्ध से महाराज अपने संगी-साथी,
 प्रजा ने तब अलौकिक स्वागत गान गाया,
 नाच उठे हर नर-नारी, पुष्प बरसाया,
 जो महाराज को अत्यंत हर्षाया,
 देख नक्षत्रों की स्थिति, चंदबरदाई घबराया,
 होने को है कैसी अनहोनी,
 देख हुआ कुछ दुखी,
 पर परिणाम पर मंद मुस्काया,
 विवशता ऐसी, किसी को बता भी न पाया,
 कालांतर विजय की सुन गाथा,
 कन्नौजपति जयचंद मारे ईर्ष्या के घबराया,
 अल्प समय में पाई कैसे चौहान ने जग प्रसिद्धि,
 कलंकित करूँगा जीवन उसका, लक्ष्य बनाया,
 अनजान लेख विधाता के,
 सारी प्रतिष्ठा दाँव पर लगाया,
 महाराज की प्रतिमा,
 अपमान स्वरूप द्वार पर लगाया,
 देख पिता का अधर्मकृत्य,
 जयचंद सुता संयोगिता ने आवाज़ उठाया,
 कटु वचन कह बहुत धिक्कार लगाया,
 नारी शक्ति, सोच का अनुपम परिचय कराया,
 मारी गई थी जो मति जयचंद की,
 कुछ समझ न पाया,
 बेटी के निश्छल प्रेम को समझ न पाया,
 इच्छा विरुद्ध वर चुनना होगा, भय दिखाया
 सच्चा प्रेम न कभी झुका, न रुका है,



चाहे प्रेम पथ हो अग्नि समान,
दो शरीर एक आत्मा मिलन को,
वे थे सब बाधा, परीक्षा को तैयार,
जब संयोगिता ने स्वयंवर,
मान पति प्रतिमा को माला पहनाया,
साक्षी मान सभा को, महाराज को जीवनसाथी बनाया,
तब कुपित हो, जयचंद ने मारने को तलवार उठाया,
थी सभा तब मौन, माँ ने आवाज़ उठाई ,
दिया स्वयंवर चुनने का अधिकार, याद दिलाई,
शेष थी कुछ मर्यादा, ममता जयचंद में,
जो छूटी कटार नीचे गिर आई,
देख अर्धांगिनी को संकट में,
पृथ्वीराज ने वीरता दिखलाई,
नारी निर्णय की लाज बचाई,
हाथ थाम संयोगिता की,
साथ जीने-मरने की कसमें खाई,
महाराज ने दी खुली चुनौती सभा को,
हो सामर्थ्य तो मुझे रोकने आओ,
अपना-अपना वीर कौशल दिखलाओ,
पर याद रहे, आँच यदि जयचंद दुलारी को आएगी
फिर पृथ्वी सा मेरा धीरज डोलेगा,
विकराल काल मुख खोलेगा,
फिर रौद्र रूप, मेरा वैसा होगा,
जैसा युद्ध तराईन-प्रथम होगा ।
इतना सुनकर सब थर्राए,
देख तेज खड़ग महाराज के,
स्तब्ध हो, अपने-अपने तन को छिपाया,
हर्षित केवल संयोगिता की माता थी,



युग—युग जीये राधा—कृष्ण सी जोड़ी,
 जब इतना कह, आँसू रोक जब विदा कराया,
 करुणा देख माँ की,
 जन—जन के आँखों में आँसू भर आएँ,
 हर्षित हो दो तन एक प्राण चले,
 मानो धरती—अंबर साथ हो एक चले,
 वाह! क्या अद्भुत नज़ारा था,
 जो भी देखा झलक युगल छवि,
 शब्द—शब्द निकले उनके मुख से,
 मानो हो स्वयं श्रृंगार रस का बड़ा कवि,
 जब पधारे महाराज संग रानी,
 हर्षित हो उठे नर—नारी,
 स्वागत गान, दिखला बहु—नृत्य,
 जन—जन ने राजा—रानी संग खुशियाँ मनाई,
 खुशियाँ न आजीवन चल पाई,
 काल ने ऐसी लीला रचाई,
 जो किया था गणना चंदरबरदाई,
 वह घटना, निकट सत्य होने को आई,
 जयचंद शत्रु देश, संधि कर आया,
 भूल सारे मर्यादा, विवेक,
 जो न था करने को, करके आया,
 इतिहास में अपकीर्ति को पाया,
 अपने हो जब बने शत्रु हितैशी,
 तब जीता कहाँ कब महान रण कोई,
 रणभेरी बजी भयंकर,
 दोनों दल की सेना, रण में आई,
 मारने—मरने, एक—दूसरे को,
 अमर होने इतिहास में आई,



एक धरती को मान माँ,
त्याग अपना सर्वस्व जी जान से की लड़ाई,
मर्यादित युद्ध नियमों से बंद हो भी,
जैसे महाभारत, अर्जुन ने थी वीरता दिखलाई,
पल में बांधी समा रण में ऐसी,
देख रण कौशल शत्रु घबराएं,
क्षण-क्षण में निकले बाण धनुष से ऐसे,
मानो पल-पल बादल अग्नि के गोले बरसाए,
घंटों में भयंकर शत्रु सेना आधी हुई,
मनोबल शत्रुओं के घुटने पर आई,
पल-पल वो कर रहे थे अपने जीवन की दुहाई,
काश! जल्द शाम हो जाती,
जान हमारी बच जाती,
दिन अंतिम प्रहर महाराज लड़े,
सैनिक संगी को ले साथ लड़े,
मानो शत्रु दल दावानल फैला,
अंतिम आधे प्रहर सब अद्भुत ऐसे लड़े,
जैसे स्वयं काल लड़ा,
अगर होती एक और प्रहर,
मिलती महाराज को जीत अवश्य,
पर इतिहास दूसरा होना था,
अंकित उसमें अद्भुत होना था,
सूर्यास्त हुआ शायद कुछ पहले,
या अथक था बलयोग उनमें,
युद्ध विश्राम जब सेना थी, सो रही
शत्रुओं ने सोते सैनिकों पर धावा बोला,
कुछ उरी जैसा घृणित कायर सा कृत था खेला,



सोते सैनिकों पर जब बाण चलाया,
 भूल सारे नियम,
 अनैतिक, अमर्यादा को दर्शाया,
 रख तलवार सैनिकों के गले पर,
 असाध्य, अजेय को बंदी बनाया,
 कायरता, कुकृत्य ने जब लांघी मर्यादा,
 तब रानी संग महिलाओं ने जौहर कर,
 त्याग, धैर्य, साहस गुणों को दर्शाया,
 नारी जाति एवं देश की लाज बचाई,
 गौरी दरबार, जब हुई महाराज की पेशी,
 बोला नज़र लो अपनी झुकाए,
 महाराज ने क्षत्रित्व की याद दिलाई,
 झुकते नहीं क्षत्रिय कभी, दुष्ट
 चाहे लो गर्दन हमारी उड़ाए
 ईश, गुरु, अग्रज अब तक शीश झुका है
 न झुकेगा अन्यत्र कहीं,
 चाहे लो जितना यातना आजमाए
 इतना सुन कुपित गौरी,
 आँख महाराज की तो हर ली,
 पर न डिगा पाया कठोर क्षत्रित्व संकल्प कहीं,
 एक योजना बनाई संग चंदबरदाई,
 तीरंदाजी प्रतिस्पर्धा प्रतिभाग करूंगा,
 बिना आँख लक्ष्य भेद मैं गौरी का प्राण हरूंगा,
 हुआ तीरंदाजी, अवसर आया,
 आज रचित इतिहास होने को आया,
 देख सामने मौत गौरी भी समझ न पाया,
 चलाएगा अंधा कैसे तीर सोच मुस्कुराया,



जब धनुष महाराज ने तीर साधा,
तब चंदबरदाई ने शब्द से उसे बांधा,
“चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण,
ता ऊपर सुल्तान है मत चूको चौहान”
इतना सुन संकेत मात्र,
लक्ष्य बना गौरी के सीने को भेदा,
प्राण पखेरु उसके हुए,
फिर महाराज साथ मृत्युलोक का साथ छोड़ा,
थे कुछ दर्शक अबाक,
कुछ बेहोश पड़े,
कुछ चकित, कुछ जयघोष किए,
वीर बहुत था यह सुत भरतवंशी,
जिसने क्या अद्भुत कौशल दिखलाया,
महाभारत के अर्जुन सा करतब दिखलाया,
यह पुनीत इतिहास हमारा,
गौरव काल का नायक हमारा ।।
यश कीर्ति है अमर,
उनपे गर्व, अभिमान करो,
उनके पद—चिह्नों पर चलने का प्रयास करो,
आओ यह संकल्प दुहराएँ,
हो हर बालक पृथ्वी सा यहाँ,
हो न कोई जयचंद यहाँ ,
चाहे हो वैचारिक मतभेद यहाँ,
हम है एक भरतवंशी,
एक हमारी पहचान सदा,
एक हमारी पहचान सदा ।।



उड़ान....अपने आसमां को पाने को



श्री नीरज भाटिया
सहायक लेखाधिकारी

"एक चिड़िया चली अपना घोंसला बुनने,
बरगद की घनी छाँव चुनने,
कभी थी चीं-चीं करती जो माँ के आलिंगन में,
आज चली है अपना घरौंदा बुनने ,
बेफिक्र कभी अपने कुटुंब संग,
आज निकली ऊँची उड़ान उड़ने,
एक चिड़िया चली अपना घोंसला बुनने,
बरगद की घनी छाँव चुनने,



हौंसला मजबूत उसे अब करना होगा,
कितने ही मीलों उसे गुज़रना होगा,
जो आसमां में ऊँचे उड़ने की ख्वाहिश है,
आँधियों के थपेड़ों के आगे न डिगना होगा,
तिनका-तिनका बुनकर निलय निर्माण होगा,
घर उसका सुंदर-सुसज्जित-सबल सब प्रकार होगा,
सपने दीप्तिमय पग सूक्ष्माकार लिए,
है एक चिड़िया चली अपना घोंसला बुनने,
बरगद की घनी छाँव चुनने,



रह-रहकर मन विरोध करे,
निर्बल देह भला कितना कष्ट वहन करे,
सोच में पड़े तो अवसाद गढ़े,
जो हो नित परिश्रमी वही लक्ष्य भेद सफलता प्राप्त करे,
दृढ़ निश्चय अचल प्रण स्थिर ध्येय,
प्राणी सदा गंतव्य गतिमान कर्म-पथ मार्ग बढ़े।”





श्री अंकित निगम
सहायक लेखाधिकारी

तीन रंग से रंगी हुई है, ये पहचान हमारी है।
ये केवल ध्वज नहीं है, इसमें अंकित आन हमारी है॥

भाल है इसका केसरिया, जो शौर्य हमारा गाता है,
ये उसके शोणित से रंगा, जो इसमें लिपट कर आता है,
उन वीरों के बलिदानों में, बसती जान हमारी है।
ये केवल ध्वज नहीं है, इसमें अंकित आन हमारी है॥१॥
तीन रंग से रंगी हुई है. . . .

श्वेत वर्ण के मध्य भाग में, सत्य अहिंसा बहती है,
विश्व-शांति है ध्येय हमारा, ये जन-जन से कहती है,
संग न्याय का चक्र है, जिसमें दर्ज उड़ान हमारी है।
ये केवल ध्वज नहीं है, इसमें अंकित आन हमारी है॥२॥
तीन रंग से रँगी हुई है. . . .



हरित प्रभा अंतिम पंक्ति की, इस माटी से आती है,
जो किसान के स्वेद से सिंचकर, फसलों में लहराती है,
ये ही खेत उद्यान है, ये ही दलहन धान हमारी है।
ये केवल ध्वज नहीं है, इसमें अंकित आन हमारी है॥३॥
तीन रंग से रँगी हुई है. . . .



इस जीवन मे जब कोई भी गर्व का क्षण आ जाता है,
नेत्र तिरंगा बनते है, मन जण-गण-मन दोहराता है,
इससे ही जय घोष, इसी से कीर्ति-प्रमाण हमारा है।
ये केवल ध्वज नहीं है इसमें अंकित आन हमारी है॥४॥
तीन रंग से रंगी हुई है, ये पहचान हमारी है।
ये केवल ध्वज नहीं है, इसमें 'अंकित' आन हमारी है॥



राम की व्याकुलता



श्री प्रत्यूष अवस्थी
सहायक लेखाधिकारी



यह चौदह वर्षों की बिछुरन, स्नेह भरे वे निश्छल नाते
बहुत याद आते हैं सीते! कहकर राम विकल हो जाते
तुम्हें स्मरण होगा लक्ष्मण! अपना बचपन खेल खिलौने
भरत, शत्रुसूदन के संग वो धमाचौकड़ी, स्वप्न सलोने

शत्रुदमन, मैया के पल्लू के नीचे ही छुप जाता था
लुका-छिपी में जब भी उसको, समझ नहीं कुछ भी आता था
हम भी कैसे जान बूझकर उससे हार लिया करते थे
कैसे उसको गले लगा फिर ढेर दुलार किया करते थे

हम बैठे हैं दूर यहाँ पर, कैसा होगा भरत हमारा
शायद तप की खरी कसौटी, कसता होगा जीवन सारा
तुम्हें याद है! माएं कैसे हमको हर पल दुलराती थीं
माँ कैकेई दूध पिलाती, छोटी मैया नहलाती थीं

वो सब कहाँ मिलेगा लक्ष्मण! दोनों नयन सजल हो आते
वाणी विद्ध हो रही मेरी अश्रु कंठ में ज्यों भर जाते
अब भी हमें याद आता है, पूज्य पिता का मुरझाया तन
श्वास वहीं थी, प्राण वहीं थे, किंतु नहीं था उनमें जीवन



कितनी बार कहा था मत जा! राम! हाय वह थे अकुलाते
आज्ञा पालन मम विडम्बना, पुत्र विरह में वे बिलखाते
मनुज बना तो नहीं पता था क्या-क्या खोना हाय! लिखा था
वन-वन उजियारे बिखराए, और अवध हर दीप बुझा था

कितना स्नेह पिता करते थे, सीते! तुम साक्षी हो इसकी
पुत्री कहते थे तुमको वे, पलकों में धरते पुतरी सी
थे कितने विह्वल जब मेरे राजतिलक की तैयारी थी
शायद दुःखों की विडम्बना उनकी खुशियों पर भारी थी

पता नहीं आने वाले इन, वर्षों में क्या होगा इत-उत
सब मेरे हैं, मैं सबका पर मानव-मर्यादा से बाधित
कितनों का भविष्य मेरे ही हाथों से सँवरना लिखा है
कितने अधमों का उद्धारण, कब तक वन निवसना लिखा है?

मैं मनुष्य बन कर पछताऊँ, सकल विवेक धरे रह जाते
भक्त-स्नेह में उलझ गया मैं कह लीलाधारी मुसकाते ।



अनंत की खोज



श्री दीप कुमार शुक्ल
सहायक पर्यवेक्षक

विराट अन्तरिक्ष के अणु सदृश्य लोक में,
अनेकशः हैं ग्रह, रवि अनेकशः हैं चन्द्रमा ॥

है इन्हीं में एक जिसमें जीव सृष्टि खेलती,
जिन्हें विकास पथ पर ये प्रकृति सदा धकेलती ॥

सृजन विभिन्न प्राणियों का हैं इन्हीं के फलस्वरूप,
सभी में प्राण एक ही, परंतु हैं अनेक रूप ॥

ब्रह्म रूपी आत्मा समस्त मूलाधार है,
है बस रहा सभी में एकमात्र निराकार है ॥

सत्य क्या, असत्य क्या, हूँ मैं इसी सोच में,
शून्य पर सवार मैं अनंत की हूँ खोज में ॥

मेरा सलाम, मेरा प्रणाम



श्री अनुराग निषाद
पुत्र - श्री अनिल कुमार
लेखाकार

मातृभूमि की रक्षा हेतु,
न्योछावर किए जिन्होंने प्राण,
उन वीर जवानों को,
मेरा सलाम मेरा प्रणाम ॥

सोचा न अपने बारे में,
अंग्रेजों को लगे भगाने में,
उन महान वीरों को,
मेरा सलाम, मेरा प्रणाम ॥

बहाया अपने रक्त को,
आजाद कराया भारत को,
उन वीर महापुरुषों को,
मेरा सलाम, मेरा प्रणाम ॥

धन्य हुए वे वीर जवान,
मातृभूमि पर जन्म पाकर,
उन वीर सेनानियों को,
मेरा सलाम, मेरा प्रणाम ॥





आज भी अमर हैं भारत में,
आज भी स्मरण करते भारतवासी,
उन वीर जनों को,
मेरा सलाम, मेरा प्रणाम ॥

फैली जो भारत में व्याप्त बुराइयाँ, भारत में,
दूर किया अपने बल पर,
उन मातृभूमि वत्सों को,
मेरा सलाम, सलाम, मेरा प्रणाम ॥

फाँसी के फंदों पर लटककर,
मातृभूमि की करते जय-जयकार,
उन महान जनों को,
मेरा सलाम, मेरा प्रणाम ॥

हँसते-हँसते सूली पर चढ़ जाते,
विष का पान बेझिझक कर जाते,
उन ज्ञात जनों को,
मेरा सलाम, मेरा मेरा प्रणाम ॥

आज़ादी दिलाने हेतु,
प्राण गँवाने को तैयार,
उन अज्ञात जनों को भी,
मेरा सलाम, मेरा प्रणाम ॥

मातृभूमि के महान वत्सों ने,
धरती को धन्य किया जिन्होंने,
उन सच्चे महापुरुषों को,
मेरा सलाम, मेरा प्रणाम ॥





मो. अरमान
सहायक लेखाधिकारी

वत्सलता की डोरी भी, कितनी अद्भुत मनमोहक है,
एक तीन बरस की चिड़िया से, मेरी कुटिया में रौनक है।
सुबह हुई मैं जाग गया, और जाग गई बिटिया मेरी,
तैयार हुआ जब जाने को, तो बोल उठी गुड़िया मेरी।
पापा तुम कहाँ जा रहे हो, और क्या लाओगे बोलो न,
तुम रोज-रोज क्यों जाते हो, कभी मेरे संग भी खेलो न।
मैंने फिर हँसकर समझाया, मैं ऑफिस जाता हूँ प्यारी,
कर्तव्य बुलाता है मुझको, इसलिए ही जाता हूँ प्यारी।
अच्छा मैं समझ गई पापा, लेकिन जब ऑफिस से आना,
तब मेरे लिए खिलौना या अच्छी सी चिज्जी ले आना।
मैं लाऊँगा कुछ बढ़िया सा, खाने को जैसा तुम बोलो,
पर सीखो और पढ़ो घर पर, जाओ किताब अपनी खोलो।
ओके पापा बॉय-बॉय अब, जाओ देर न हो जाये,
मीठी वाली पप्पी ले लो, खट्टी कहीं न हो जाये।
धन्य हुआ मैं कोटि-कोटि, कुदरत की सौगातों से,
उसके लघु आलिंगन और मधु जैसी इन बातों से।



श्री राजीव सिंह
सहायक पर्यवेक्षक

किसी से दिल लगा के देख लिया ।
अपना सब कुछ लुटा के देख लिया ॥
अपना कोई था ही नहीं ज़माने में ।
सबको अपना बना के देख लिया ॥
मौत से बढ़कर है इंतजार ।
आँखों को पत्थर बना के देख लिया ॥
दोस्त से बेहतर दुश्मन निकले ।
दोस्ती को मैंने आजमा के देख लिया ॥
किस अदालत में जाएँ इंसान मांगे किससे ।
हर मुंसिफ़ को फरियाद सुना के देख लिया ॥
दूर-ओ-हरम भी रास न आया मुझको ।
हर दर का चन्दन माथे पे लगा के देख लिया ॥
हर मक़ाम पे वो चेहरा बदल लेता है "राही" ।
दिल को हमने आईना बना के देख लिया ॥



लड़कों की जिंदगी



श्री शिवम कुमार
लेखाकार

जिंदगी में कठिन कोई काम नहीं, लेकिन लड़का होना भी आसान नहीं
लड़कों की जिंदगी आसान नहीं होती, मगर इनके चेहरे पर कभी थकान नहीं होती
दिलों में लेकर घूमते हैं ये दरिया, फिर भी इनकी आँसुओं से पहचान नहीं होती।
सब लोग लड़कों को मक्कार, बत्तमीज, आवारा क्या-क्या नहीं कहते हैं
फिर भी बिन लड़कों के इनके घर के काम नहीं चलते हैं।
कंधो पर बोझ लिए रहते हैं घर परिवार का
एक बात तो पक्की है, ये मुश्किलों में भी साथ नहीं छोड़ते हैं अपने यार का।
घर में बड़े हो या छोटे, ये अपनी जिम्मेदारियों से कभी नहीं छूटे
अपने ही घर के लिए ये घर से दूर रहते हैं
माँ को हो न कोई चिंता इसलिए फोन पर मैं ठीक हूँ, यही कहते हैं।
लड़की की विदाई पर रो देता है सारा घर, गाँव और ज़माना
लड़के के विदा होने पर किसी के दिल में नहीं है दो आँसुओं का भी ठिकाना
हम जितना समझते हैं लड़कों की जिंदगी उतनी आसान नहीं होती है
लड़को की आँसुओं से पहचान नहीं होती है।
बेशक होते हैं ये अपनी मम्मी-पापा के लाडले बेटे
लेकिन ये अपनी पहचान अलग बनाते हैं
नौकरी की खातिर ये दर-दर की ठोकर खाते हैं, गिरते हैं, फिर गिरकर उठ जाते हैं।
कभी हर बात में ढेरों नखरे होते थे इनके, खाना, पानी सब बिस्तर पर मांगते रहते थे
अब देखो सब अपने हाथों से करना सीख गए हैं
पहले खेल में उलझे रहते थे अब जिम्मेदारियों में बंधे रहते हैं।
अब बाहर रहके सारी फ़रमाइसे भुलाते रहते हैं



कभी मम्मी से पैसों के लिए झगड़ा करते, मुझे आज पार्टी करनी है
 मुझे आज दोस्तों के साथ घूमने जाना है
 मन के पैसे न मिलने पर घर से भागने की धमकी देना
 गुस्सा हो जाना, फिर मम्मी का मनाना, फिर एक पल में सब भूल जाना
 ये सब लड़कों की कहानी है।

कुछ लड़कों को जरूरत जगाए रहती है, कुछ को जिम्मेदारियाँ सोने नहीं देती हैं
 हम जितना समझते हैं, लड़कों की जिंदगी उतनी आसान नहीं होती है
 लड़कों की आँसुओं से पहचान नहीं होती हैं।

एक वक्त ऐसा भी आता है, जब इनको प्यार हो जाता है
 एक तरफ़ इनकी प्रेमिका तो दूसरी तरफ़ परिवार होता है।

जिंदगी को चुनें तो घरवाले नाराज़, घरवालों की सुने तो इनके सिर पे बेबफ़ाई का ताज़
 कह सकते हैं हम कि हर हाल में इनकी उलझने कम नहीं होती है।
 हम जितना समझते हैं लड़कों की जिंदगी उतनी आसान नहीं होती है
 लड़को की आँसुओं से पहचान नहीं होती हैं।

लड़के शांत रहने का हुनर न जाने कहाँ से लाते हैं
 आए लाख मुश्किलें फिर भी ये मुस्कराते हैं

पापा के सामने ये तनिक भी नहीं बोल पाते हैं, मम्मी से दिल खोलकर बतलाते हैं।
 निभा लेते हैं ये हर रिश्ता, माँ, भाई, बहन, गर्लफ्रेंड का बड़ी बखूबी से
 लेकिन दोस्तों और परिवार से बढ़कर इनकी कोई चीज नहीं होती है।
 हम जितना समझते हैं, लड़कों की जिंदगी उतनी आसान नहीं होती है
 लड़कों की आँसुओं से पहचान नहीं होती है।



लेखा संगम

गद्य संगम

चिराग तू जला करे...



श्री यश मालवीय
पर्यवेक्षक (सेवानिवृत्त)

चिराग तू जला करे तमाम रात
कि रीझकर उतर पड़े नवल प्रभात

बहुत गहरी अमावस है। अँधेरा काले कौए की तरह पंख पसार रहा है। काजल की लीक चटख होती जा रही है। आसमान से काली रात उतरती चली आ रही है। चारों तरफ एक काली सी नदी बह रही है जिसमें अवरोधों के काले-काले पत्थर उजालों के रास्ते में एक दीवार सी खड़ी कर रहे हैं, पर हमारे पड़ोस की कुम्हारों की बस्ती में मिट्टी के नन्हें-नन्हें दिए भी गढ़े जा रहे हैं। अँधेरा कितना भी संगीन हो कुम्हार दिए गढ़ने से कब पीछे हटे हैं। कब हारे हैं मिट्टी में रोशनी को साकार करने वाले ये कुम्हार-देवता। ये चाक पर घुमाते हैं गोल-गोल अपनी धरती को और धरती अपनी कोख से दियों की कतार सौंपती जाती है। बूढ़े हाथों को। आज इधर-उधर झिलमिलाती बिजली की झालरों के बीच भी असली अस्तित्व तो इन्हीं मिट्टी के दियों का है। क्योंकि इन्हीं दियों में तो हमारी संस्कृति साँस लेती है। हमारी उजली थाती, उजली विरासत अथवा उजली धरोहर तो सूरज के ये नन्हें-नन्हें उत्तराधिकारी ही संभालते हैं। बिजली तो जा भी सकती है, पर इंसान रूपी इन दियों के अंतर का स्नेह कभी सूखता नहीं। कविवर विजयदेवनारायण साही ने इन्हें लघु मानव कहा है। ये लघु मानव अँधेरे के दैत्य से लोहा लेते हैं। अँधेरे की स्लेट पर अपने उजले हस्ताक्षर करते हैं। एक दिया आँचल की ओट में भी जलता है। ये दिये भी कालांतर में बड़े-बड़े रोशनी के पुंज साबित होते हैं। महर्षि दयानंद हों या स्वामी विवेकानंद या फिर गाँधी लोहिया जयप्रकाश। हमारे लघु मानव ही महामानव बन जाते हैं। दिये अँधेरे की छाती पर उजाले का परचम लहराते हैं। सही अर्थों में इंसान परिभाषित होता है। मानव धर्म सबसे बड़े धर्म के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। दिया अँधेरे में भी इंसान को ढूँढ लेता है। यही इंसान त्यौहार की गरिमा से न केवल जुड़ता है वरन जन-जन को जोड़ता भी है।
कविवर हरिवंशराय बच्चन कहते हैं—





माटी का तन माटी का मन
क्षणभर जीवन मेरा परिचय

यह परिचय ही धीरे धीरे समय की शिला पर अमिट हो जाता है। अब क्रमशः कोरोना महामारी का अंधकार बीतने को है। ये लड़ाई दिये और तूफान की ही थी। अंततः दिये ने तूफान को छिन्न-भिन्न कर डाला। जनाब निदा फ़ाजली याद आते हैं—

जिन चिरागों को हवाओं का कोई खौफ़ नहीं
उन चिरागों को हवाओं से बचाया जाए

यह इंसान की अपराजेय जिजीविषा का ही सुपरिणाम है कि अँधेरा चूहे की तरह एक कोने में दुबकता जा रहा है। महालक्ष्मी मंद मंद मुस्कुरा रही है। अभी अभी इसी वर्ष अतीत हुए बुद्धिसेन शर्मा की याद आती है, वह कहते हैं—

किसी ने क्या दिया जलते दिये को
दिया बस नाम उसका रख दिया है
उमाकान्त मालवीय कहते हैं —

अँधियारे में जुगनू बोये थे कल
सूरज की आज फसल काटने चले

तिमिर चरण आलोक पैजनी का मंगलगान चल रहा है। अँधेरा थरथरा रहा है, उसकी रूह काँप रही है। रोशनी की एक शहतीर सी उठती जा रही है। महादेवी जी का सबसे प्रिय प्रतीक है दिया। वह यूँ ही नहीं हैं दीपशिखा की कवयित्री। जब आपातकाल में अँधेरे की बारिश हो रही थी तब भी वह दिये पर गहरा विश्वास और आस्था लिए अनवरत कहती रहीं—

यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो

इस नीरवता के भी अपने मायने हैं। तभी तो दीपावली पर 'नभ आज मनाता तिमिर पर्व, धरती रचती आलोक छन्द' की अवधारणा मूर्त होती है। महादेवी जी स्वयं अपने आँगन में बड़े मन से दीपावली



मनाती थीं। रुई की घी में डूबी नन्हीं—नन्हीं बाती बनाती थीं और श्वेतवसना सरस्वती की तरह गोधूलि बेला में लक्ष्मी पूजन का वातावरण रच देती थीं। प्यारी—प्यारी सी रंगोली सजती थीं और उनमें बीच—बीच में जलते दिए रख देती थीं। रंगों और रेखाओं का एक उत्सव सा साकार हो उठता था। वह कहती भी थीं कि जो कंपन दिये की लौ में है वह इन बिजली के लड्डुओं में कहाँ? लाई लावे, खील बताशे का संयोग एक ऐसा महापर्व रच देता था जिससे नवान्न की सुगंध सीढियाँ चढ़ती उतरती थीं। घर—घर मिष्ठान्न तीर्थ हो जाता था। चंदन, कपूर, रोली, अगरु धूप की गंध दिशा—दिशा में ऋचाओं की तरह लिखी मिलती थी। इंसान अँधेरे के समूचे अस्तित्व पर रोशनी की इबारत टांक देता था। यह सिलसिला आज भी चल रहा है। तभी तो कवि को कहना पड़ता है —

मोमबतियों में जला, पिछले दिन का शोक
दीपवाली सहेजती, अंतर का आलोक ॥

अथवा,

माटी के तन पर हुई, यह रोशनी कमीज़
दिये पहनकर हँस रहे, घर आँगन दहलीज़ ॥

सच तो यह है कि अँधियारे जंगल में एक मोमबत्ती, काजल के छँटने का प्रण रत्ती—रत्ती। इस काजल को और इस गहरे अँधेरे को छँटना ही होता है, जब इंसान मोम की तरह अपने को जलाता है और महसूस करता है कि मोम के जिस्म में धागे का जिगर जलता है। इसी साल गायकी का एक और दिया बुझ गया जो सूरज की ही तरह अपने सुरों से भीगा आलोक हमारे समय और समाज को देता रहा। वह दिया थीं स्वर कोकिला लता मंगेशकर। जब वह पंडित नरेन्द्र शर्मा के शब्दों 'ज्योति कलश छलके' को अपना भीगा हुआ तरल स्वर थीं तो अँधेरे की पूरी सल्तनत ही ध्वस्त हो जाती थी। हमारा भारत तो इस तरह के अनगिनत दियों का ही देश है। दीपावली की परिकल्पना ही अपने आप में विशिष्ट है। राम सीता किसी मंदिर में नहीं, हमारे मन की अयोध्या में ही लौट रहे हैं। मगर मुंगेर के कविवर छंदराज कहते हैं—

हमारे अवध को किस खण्ड में तब्दील कर डाला
बहुत मायूस हो रघुवर सिया से बात करते हैं



हमें इस दीपावली पर सियासत के राम की नहीं अपने दिलों में विराजे इस राम की मायूसी को भी समझना होगा, तभी अँधेरे, इंसान और दिये के रिश्ते पूरमपूर समझ आएँगे ।

अँधेरा फिर भी अँधेरा है। उजाले के सामने उसकी औकात ही क्या है? हर पहर का अपना उजाला होता है। जो उजाला रात के अँधेरे के महासमुद्र में तिरता है वह उजाला सुबह के उजाले से भिन्न होता है। उसकी बस शिनाख़्त भर करनी होती है। वही दीपावली को सम्भव बनाता है। वह इंसान के आत्मसंघर्ष से एकमेक होता है। वह अमावस को परास्त ही नहीं करता वरन् रोशनी की एक ऐसी लकीर खींच देता है, जो अँधेरे की नदी के साहिल पर सूरज की नाव लेकर आ जाता है। अँधेरा तार-तार हो जाता है। यह उजाला प्रायः दबे पाँव आता है पर फिर भी उसके पाँव की आहट आ ही जाती है। हम उसे जान लेते हैं, पहचान लेते हैं क्योंकि उसकी पगध्वनि हमारी बहुत अपनी और परिचित सी होती है। अमावस की काली रात में सौ-सौ दीपावलियाँ सहसा ही यादों में कौंधने लगती हैं। इनका कौंधना ही हमें उत्सवजीवी बनाता है। अँधेरे के साँप का फन कृष्ण कन्हैया कुचल ही देते हैं। योगेश्वर कालिया नाग के फन पर नृत्य करते हैं। महाकवि रामधारी सिंह दिनकर मेघमन्द्र स्वर में गर्जना करते हैं—

नाच-नाच फणि व्याल
तुझपर मैं बाँसुरी बजाऊँगा।

आज भी यह बाँसुरी बज रही है। इसीलिए तो अमावस अनमनी है, उसे अपने कसूर का एहसास हो रहा है। वह अपराध बोध में है और ग्लानि का अनुभव कर रही है। वह सोच रही है कि उसने अँधेरे से टकराने की जुर्रत ही क्यों की? कृष्ण की यात्रा तो वेणु से पांचजन्य तक की है। अँधेरे को अक्ल नहीं आई तो कृष्ण के पास बाँसुरी के साथ-साथ पांचजन्य भी है, वह शंख फूँक देंगे। यह दीपावली हमारे दिलों का अँधेरा ही फूँकने आई है। धू-धू जलती बस्तियों के जलने का गहरा मलाल भी उसके मन में है। वह इन त्रासदियों के पीछे के अदृश्य हाथों को भी जानती है। उसे वह रोशनी चाहिए ही नहीं, जो बस्तियाँ फूँककर रोशनी करती है, उसे तो वह रोशनी चाहिए, जो मन्दिर के दिये में होती है। हेमन्त दा की आवाज़ कानों में गूँज रही है, छुपा लो दिल मे यूँ प्यार मेरा कि जैसे मन्दिर में लौ दिये की। यह दिया अनुराग का दिया है। अनुराग के दिये का रंग कैसा होता है, देखा है कभी? वह अँधेरे में भी दिये की धूप से इंद्रधनुष खिला देता है और यह इंसान ही होता है, जो दीपावली को एक सार्थक और सकारात्मक अर्थ देता है।

सर्प संकट

(रस्किन बॉन्ड की कहानी "The Snake Trouble" का हिंदी अनुवाद)



सुश्री साधना राय

हिंदी अधिकारी

भारतीय रेलवे से सेवानिवृत्ति और देहरा में बस जाने के बाद, दादा जी असामान्य पालतू पशुओं को रखकर अक्सर अपने दिन (और हमारे) रोमांचक बना देते थे। उन्होंने बाजार में एक सर्प के जादूगर को बीस रुपए देकर एक छोटा अजगर खरीद लिया। फिर, उत्सुक लड़के और लड़कियों के झुंड की खुशी के लिए, उन्होंने अपने कंधे पर अजगर को लटका लिया और उसे घर ले आए।

उस समय मैं उनके साथ ही था, और दादा जी के साथ चलते हुए बहुत गर्व का अनुभव हो रहा था। वे देहरा में काफी मशहूर थे, खासकर गरीब लोगों में, और सभी, अजगर को नज़रंदाज करते हुए, उनका विनम्र भाव से अभिवादन कर रहे थे। वे, असल में, दादा जी को विचित्र जीव जंतुओं के साथ देखने के आदी थे।

हमें आते हुए सबसे पहले टूटू बंदरिया ने देखा, जो कटहल के पेड़ पर झूल रही थी। अजगर, उसकी जाति का पुराना दुश्मन, पर एक नज़र पड़ी और वह डर से चिल्लाती हुई घर में भाग गई। फिर हमारा तोता, पोपाई, जिसका पिंजरा बरामदे में था, डरावने तरीके से चीखने और सीटी बजाकर पुकारने लगा। उसकी सीटी भाप इंजन की जैसी थी। उसने यह कला बहुत पहले सीखी थी जब हम रेलवे स्टेशन के नजदीक रहा करते थे। यह शोर दादी जी को बरामदे में खींच लाया, जहां अजगर को दादा जी के गले में लिपटा देखकर वे लगभग बेहोश ही हो गई थीं।

दादी जी उनके अधिकतर पालतू जानवरों को सहन कर लेती थीं, पर कीड़ों-मकौड़ों की सख्त मनाही थी। यहाँ तक कि एक सीधी-साधी छिपकली भी उनका खून सुखा देती थी। बहुत कम उम्मीद थी कि वे अजगर को घर में घुसने देतीं।

‘वह तुम्हारा गला दबाकर तुम्हें मार डालेगा!’ वे चिल्लाईं।

‘बेवकूफ’, दादा जी ने कहा। ‘यह सिर्फ छोटा-सा बच्चा है’

‘ये जल्दी ही हम सब से घुल मिल जाएगा,’ मैंने समर्थन देते हुए कहा।

‘ऐसा हो सकता है, जरूर ऐसा ही होगा,’ दादी जी ने कहा, ‘पर मेरी उससे घुलने-मिलने की कोई इच्छा



नहीं है। और कल तुम्हारी चाची रूबी आने वाली हैं हमारे साथ रहने के लिए। जब उसे पता चलेगा कि इस घर में सांप है तो वो उसी क्षण इस घर से चली जाएगी।

‘अच्छा, तब तो हमें शायद सबसे पहले यही चीज उन्हें दिखानी चाहिए’। दादा जी ने कहा, जिन्हें रूबी चाची उबाऊ लगती थीं।

‘तुरंत इसे कहीं छोड़कर आओ,’ दादी जी ने कहा।

‘मैं इसे बागीचे में नहीं छोड़ सकता। यह मुर्गियों के ओसारे में घुस सकता है, और फिर सोचो हम कहाँ होंगे?’

‘और कुछ मुर्गियाँ भी कम हो जाएंगी,’ मैंने युक्तिपूर्वक कहा, पर इस बात ने दादी जी को अजगर हटवाने के लिए और दृढ़ कर दिया।

‘इस डरावनी चीज को बाथरूम को बंद करो,’ उन्होंने कहा। ‘जाओ और उस व्यक्ति को ढूँढो जिससे तुमने इसे खरीद था, और उसे यहाँ लेकर आओ ताकि वह इसे ले जाए! वह वो रुपए भी रख ले जो तुमने उसे दिया था’।

दादा जी और मैं सांप को बाथरूम में ले गए और उसे खाली टब में रख दिया। हतोत्साहित—सामहसूस कर रहा हूँ, दादा जी ने कहा। ‘शायद तुम्हारी दादी सही हैं। मैं रूबी को लेकर परेशान नहीं हूँ, पर हम नहीं चाहते कि अजगर टूटू या पोपाई को पकड़ ले’।

सांप के जादूगर को ढूँढने हम बाजार कि तरफ दौड़े पर जिस व्यक्ति ने हमें सांप बेचा था, निश्चित ही जंगल में अपने गाँव लौट चुका है, दादा जी के लिए दूसरा अजगर ढूँढने के लिए; और दूसरे सांप के जादूगर खरीदने के इच्छुक नहीं थे, सिर्फ बेचना चाहते थे। उदास हम घर लौटे तो दादी जी को बरामदे में आगे—पीछे टहलते पाया। बस एक बार उन्होंने हमारा चेहरा देखा और समझ गई कि हम सांप से छुटकारा पाने में असमर्थ रहे।

‘ठीक है,’ दादी जी ने कहा। ‘अब तुम लोग ही इसे ले जाओ और ध्यान रखना कि ये वापस न आए’।

‘हम इसे छोड़ आएंगे दादी जी,’ मैंने विश्वास के साथ कहा। ‘आप परेशान ना हों’।

दादा जी ने बाथरूम का दरवाजा खोला और अंदर गए। मैंने उनके एकदम पीछे था। हम अजगर को कहीं नहीं देख पा रहे थे।

‘वह चला गया,’ दादा जी ने कहा।

‘हमने खिड़की खुली छोड़ दी थी,’ मैंने कहा।



‘जानबूझकर, कोई संदेह नहीं’, दादी जी ने कहा। ‘पर वह ज्यादा दूर नहीं गया होगा। तुमलोग अच्छी तरह से अहाते में ढूंढो’।

बहुत ही ध्यान से घर, छत, रसोईघर, बगीचा और मुर्गियों के बाड़े में ढूंढा गया, पर अजगर का कोई नामोनिशान नहीं था।

‘वह जरूर ही बगीचे की दीवार से उस पार चला गया होगा’, दादा जी ने सावधानी से कहा। ‘वह अब तक काफी दूर चला गया होगा!’

अजगर दुबारा नहीं दिखा, और जब रूबी चाची अच्छा खासा सामान लेकर आई, यह बताने के लिए कि वे लंबे दिनों तक रुकने वाली हैं, सिर्फ एक तोता ही था जो लंबे और कान बहरा कर देने वाली सीटियों के साथ उनका अभिवादन कर रहा था।

2

कुछ दिनों तक मैं और दादा जी थोड़े चिंतित थे कि कहीं अजगर अचानक दिखाई ना पड़ जाए, पर जब वह दुबारा नहीं दिखा तो हमें लगा कि जो हुआ वो ठीक ही हुआ।

और फिर, एक शाम, बगीचे से आई एक चीख से हम चौंक गए।

कुछ क्षण बाद, रूबी चाची बरामदे की सीढ़ियों से उड़ती हुई आई, हाँफती हुई बोलीं— ‘अमरुद के पेड़ पर! मैं अमरुद तोड़ रही थी जब मैंने उसे देखा मुझे घूरते हुए। वो मुझे ऐसे देख रहा था मानो मुझे जिंदा खा जाएगा....’

चाची के ऊपर गुलाब जल छिड़कते हुए दादी जी ने कहा, ‘शांत हो जाओ, बच्चे,’। ‘हमें बताओ, क्या देखा तुमने?’

‘सांप!’ रूबी चाची ने रोते हुए कहा। ‘एक बड़ा ब्राज़ीलियन अजगर अमरुद के पेड़ पर है। उसकी आँखें बहुत भयानक थीं, और वो मुझे बड़े अजीब तरीके से देख रहा था’।

‘वो तुम्हें अमरुद से ललचा रहा था, कोई शक नहीं’, दादा जी ने अपनी हंसी छिपाते हुए कहा। उन्होंने मुझे इशारा किया, और मैं बगीचे की तरफ दौड़ा। पर जब तक मैं अमरुद के पेड़ तक पहुँचा, अजगर (अगर वो अजगर रहा होगा) जा चुका था।

‘रूबी चाची ने जरूर ही उसे डरा दिया होगा,’ मैंने दादा जी से कहा।

‘मुझे कोई आश्चर्य नहीं,’ उन्होंने कहा। ‘पर वो वापस आएगा, रणजी। मुझे लगता है उसे तुम्हारी चाची पसंद आ गई हैं’।

सच ही, अजगर थोड़े समय के लिए ही सही पर अक्सर दिखने लगा, ज्यादातर ऐसी जगहों पर



जहाँ उसकी कल्पना नहीं की गई हो।

एक सुबह मैंने उसे ड्रेसिंग टेबल पर लिपटे हुए पाया, शीशे में अपने आप को निहारते हुए। मैं दादा जी के पास गया, पर जब तक हम लौटे अजगर जा चुका था।

वह वापस से बगीचे में देखा गया, और एक दिन मैंने उसे छत पर जाने वाली लोहे की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए देखा। मैंने उसका पीछा किया, झटके में सीढ़ियाँ चढ़ गया, जिन्हें मैं कई बार चढ़ चुका था। मैं छत पर पहुँचा और मैंने देखा कि सांप नाले में चला जा रहा है। उसकी पूँछ का अंतिम भाग कुछ क्षण के लिए दिखाई दिया और फिर वो भी गायब हो गया।

‘मुझे लगता है वह नाले में रहता है,’ मैंने दादा जी से कहा।

‘वो अपना खान कहाँ से पाता है? दादी जी ने पूछा।

‘शायद खेत के चूहे जो आफत थे, उनको खाता है। याद है, वे भी नाले में ही रहते थे’।

‘हाँ... दादी जी विचार कर रही थीं। ‘सांप का अपना ही फायदा है। खैर, जब तक वह छत पर रहे और मुर्गियों की जगह चूहा खाता रहे...’।

पर अजगर छत तक ही सीमित नहीं रहा। रूबी चाची की चीखें सुन हम उनके कमरे की तरफ दौड़े। उनके ड्रेसिंग टेबल पर अजगर था, स्पष्ट रूप से अपने आप को निहार रहा था।

‘इसे इतना आदर सत्कार मिल रहा है कि ये और अभिमानी हो गया है,’ दादा जी ने कहा, और अजगर को उठाने लगे और साथ दिया रूबी चाची की चीखों ने। ‘इसे पकड़ना चाहोगी रूबी? लगता है इसे तुमसे लगाव हो गया है’।

रूबी चाची कमरे से भागकर बरामदे में गई जहाँ पोपाई तोता के उपहास वाली सीटियाँ उनका स्वागत कर रही थीं।

बेचारी रूबी चाची! वो एक सप्ताह पहले ही लखनऊ लौट गई, जहाँ वो स्कूल शिक्षिका थीं। उन्होंने कहा कि वे हमारे घर की अपेक्षा स्कूल में ज्यादा सुरक्षित थीं।

3

दादा जी को इतने आराम और आत्मविश्वास से अजगर को पकड़ते हुए देख कर मैंने निश्चय किया कि मैं भी वैसे की करूंगा। इसलिए दूसरी बार मैंने सांप को छत की सीढ़ियाँ चढ़ते देखा तो मैं भी उसके साथ-साथ चढ़ने लगा। वो रुक गया, और मैं भी रुक गया। मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और वो मेरे हाथ पर सरकते हुए मेरे कंधे पर पहुँच गया। चूँकि मैं नहीं चाहता था कि वो मेरे गले में लिपटे, मैंने उसे दोनों हाथों से पकड़ा और बगीचे में ले आया। उसने बुरा नहीं माना।



सांप ठंडा और फिसलाऊ था, और पहले पहल मेरे रोंगटे खड़े हो गए। पर जल्दी ही मैं अभ्यस्त हो गया, और उसे भी मेरा बर्ताव अच्छा लगा होगा, क्योंकि जब मैंने उसे नीचे रख देता तो वह मेरे पैर पर चढ़ने लगता। चूंकि मुझे और भी काम थे, मैंने उसे एक बड़े खाली टोकरे, जो बगीचे में रखा गया था, में छोड़ दिया। वह मुझे अपलक, भावशून्य आँखों से घूरता रहता। कोई तरीका नहीं था यह जानने का कि वह क्या सोच रहा है, यदि सचमुच ही वह कुछ सोचता हो तो।

मैं साइकिल चलाने चला गया, और जब लौटा तो देखा कि दादी माँ अमरूद तोड़कर टोकरे में डाल रही थीं। अजगर जरूर ही कहीं और चला गया होगा।

जब टोकरा भर गया, दादी माँ ने कहा, 'क्या तुम इसे मेजर मलिक को दे आओगे? आज उनका जन्मदिन है और मैं उन्हें बढ़िया उपहार देना चाहती हूँ।'

मैंने टोकरे को अपनी साइकिल के कैरियर पर रखा और साइकिल चलाते हुए रास्ते के अंत पर मेजर मलिक के घर पहुँचा। मेजर मुझे अपने घर की सीढ़ियों पर ही मिल गए।

'और आज मेरे लिए तुम्हारी भली दादी माँ ने क्या भेजा है रणजी?' उन्होंने पूछा।

'आप के जन्मदिन पर एक उपहार, सर,' मैंने कहा, और नीचे उनके सामने टोकरा रख दिया।

अजगर, जो अमरूदों के नीचे दबा पड़ा था, इसी समय जाग उठा और कई फुट ऊंचा खड़ा हो गया। अमरूद चारों तरफ बिखर गए। मेजर ने कोई मंत्र पढ़ा और अंदर भागे।

मैंने अजगर को वापस अंदर किया, टोकरा उठाया, साइकिल पर सवार हुआ और तीव्रतम गति से गेट के बाहर निकल गया। और अच्छा हुआ जो मैंने ऐसा किया, क्योंकि मेजर मलिक धावा बोलते हुए दोनाली बंदूक से लैश होकर घर से निकले, जिसे वे सभी जगह पर लहरा रहे थे।

'क्या तुमने अमरूद पहुँचा दिए?' मेरे घर पहुँचते ही दादी माँ ने पूछा।

'मैंने पहुँचा दिए,' मैंने ईमानदारी के साथ बतलाया।

'और क्या वे खुश हुए?'

'वो आपको लिखेंगे और धन्यवाद देंगे,' मैंने कहा। और उन्होंने ऐसा ही किया।

'प्यारे उपहार के लिए धन्यवाद,' उन्होंने लिखा। निश्चित ही आपको नहीं पता होगा कि मेरे डॉक्टर ने मुझे किसी प्रकार के अनुचित उत्तेजना के लिए मना किया है। मेरा ब्लड प्रेशर भी बढ़ा हुआ है। आपके पोते के दर्शन से उसमें कोई सुधार नहीं हुआ। फिर भी, भावना ही मायने रखती है और मैं इन सब को एक अच्छे मज़ाक के रूप में ले रहा हूँ....'

'क्या अजीब पत्र है,' दादी माँ ने कहा। 'वे जरूर बीमार होंगे, बिचारे। क्या अमरूद ब्लड प्रेशर के



लिए हानिकारक हैं?’

‘नहीं, अकेले हों तो नहीं’ पर दूसरी चीजों के साथ वे थोड़े कष्टदायक हो सकते हैं’। दादा जी ने कहा, जिन्हें पता था कि क्या हुआ है।

4

जैसे ही हम सभी, दादी माँ सहित, अजगर को घर में और अहाते में देखने के अभ्यस्त होने लगे थे, यह तय हुआ कि हम सभी कुछ महीनों के लिए लखनऊ जाएंगे।

लखनऊ एक बड़ा शहर था, देहरा से करीब तीन सौ मील दूर। रूबी चाची वहाँ रहती थीं और काम करती थीं। हम उनके साथ रहने वाले थे, और निश्चित ही हम अपने साथ अजगर, बंदर या दूसरे असामान्य जीव नहीं ले जा सकते थे।

‘पोपाई का क्या होगा?’ मैंने पूछा।

‘पोपाई कोई पालतू नहीं हैं,’ दादी माँ ने कहा। वह हममें से ही एक है। वह भी आएगा’।

और फिर हमारे तोते की चीखों और सीटियों से देहरा रेलवे प्लेटफॉर्म पर गड़बड़ी मच गई, क्योंकि हमारा तोता गार्ड की सीटी और ट्रेन की सीटी, दोनों की नकल कर सकता था। लोग अपने अपने डिब्बे की तरफ भागे, यह सोचकर की ट्रेन छूटने वाली है, और फिर पता चला कि गार्ड ने तो सीटी ही नहीं बजाई। जब वे नीचे उतरते, पोपाई दूसरी तीखी सीटी बजा देता, जिसकी वजह से फिर से सभी ट्रेन के लिए दौड़ पड़ते। यह कई बार हुआ और जब वास्तव में गार्ड ने सीटी बजाई फिर ट्रेन में चढ़ने के लिए कोई नहीं भाग, और कई यात्री पीछे छूट गए।

‘क्या तुम तोते का मुह बंद नहीं कर सकती हो?’ दादा जी ने पूछा, जब ट्रेन स्टेशन को पीछे छोड़ तेज गति से चलने लगी थी।

‘मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी,’ दादी माँ ने कहा। मैंने इसके लिए टिकट खरीदा है, और यह जितना मन चाहे यात्रा का आनंद उठाने का हकदार है’।

जब भी हम किसी स्टेशन पर रुकते, पोपाई फल विक्रेताओं और दूसरे लोगों को खिड़की में झाँकने से रोकता। यात्रा खत्म होने तक, उसने दो उंगलियों और एक नाक पर चोंच मारी थी, और टिकट निरीक्षक के कान को काट लिया था।

यह रात की यात्रा थी, और अब दादी माँ ने अपने आप को कंबल से ढँक लिया था और एक बर्थ पर लेट गई थीं।

‘बहुत थकावट भर दिन था। मैं सो जाती हूँ,’ उन्होंने कहा।



‘क्या हम कुछ खाएंगे नहीं?’ मैंने पूछा।

‘मुझे भूख नहीं लगी है—घर से निकलने से पहले मैंने कुछ खा लिया था। तुम दोनों पिकनिक पेटी से निकालकर खा लो’।

दादी माँ सो गई और यहाँ तक कि पोपाई भी ऊँघने लगा था।

‘मुझे भूख लगी है,’ मैंने कहा। ‘दादी ने हमारे लिए क्या बनाया है?’

‘समोसे, ऑमलेट, और तंदूरी चिकन। बर्थ के नीचे डिब्बे में सब है’।

मैंने बेंत की पेटी को बाहर खींचा और डिब्बे के बीच में घसीट लाया। फीते ढीले बंधे हुए थे। जैसे ही मैंने उन्हें खोला ढक्कन झटके से खुल गया, और मैं आश्चर्य से चकित रह गया। पेटी में अजगर था, कुंडली मारकर आराम से बैठ हुआ था। हमारे भोजन का कोई नामोनिशान नहीं था।

‘यहाँ अजगर है,’ मैंने कहा। ‘और इसने हमारा सारा भोजन खत्म कर दिया है’।

‘बेवकूफ’ दादा जी ने कहा, और पेटी के पास मेरी बगल में आ गए।

‘अजगर ऑमलेट और समोसा नहीं खाते। वे जीवित प्राणी को भोजन के रूप में पसंद करते हैं! क्यूँ, ये हमारी पेटी नहीं है। हमारी भोजन वाली पेटी निश्चित ही छूट गई है! मेजर मलिक ने ही हमारा सामान उठवाने में मदद की थी न? मुझे लगता है उन्होंने हमारी पेटी के साथ अपनी वाली बदल दी है!’

दादा जी ने पेटी को झटके से बंद किया और उसे बर्थ के नीचे धकेल दिया।

‘दादी माँ को इसे देखने मत देना,’ उन्होंने कहा। ‘शायद वो सोचेंगी कि हम इसे जानबूझकर अपने साथ लाए हैं’।

‘मुझे भूख लगी है,’ मैंने शिकायत की।

‘अगले स्टेशन पर पहुँचने तक रुको, फिर हम कुछ पकौड़े खरीद लेंगे। तब तक पोपाई की कुछ हरी मिर्ची खा लो’।

‘नहीं, धन्यवाद,’ मैंने कहा। ‘आप खा लीजिए, दादा जी’।

और दादा जी ने, जो केवल मिर्च भी खा सकते थे, दो चार मिर्च अपने मुँह में डाली और संतोषपूर्वक चबाने लगे।

आधी रात के कुछ बाद गलियारे के छोर पर काफी हो—हल्ला सुनाई दिया। पोपाई ने शिकायत रूपी चीख लगाई। दादा जी और मैं यह देखने के लिए उठे कि आखिर हुआ क्या है।

अचानक चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी—‘सांप, सांप!’

मैंने बर्थ के नीचे देखा। पेटी खुली पड़ी थी।



‘अजगर बाहर निकल गया है,’ मैंने कहा, और दादा जी अपने पायजामे में ही डिब्बे से बाहर दौड़ पड़े। मैं उनके ठीक पीछे था।

करीब एक दर्जन यात्री शौचालय के बाहर इकट्ठा थे।

‘कोई दिक्कत है?’ दादा जी ने अनजान बनते हुए पूछा।

‘हम शौचालय नहीं जा सकते,’ किसी ने कहा। ‘अंदर एक बहुत बड़ा सांप है’।

‘मुझे ज़रा देखने दो, मैं सांप के बारे में काफी जानता हूँ’। दादा जी ने कहा।

यात्रियों ने रास्ता छोड़ा, और दादा जी और मैं शौचालय में एक साथ घुसे, पर अजगर का कोई नामोनिशान नहीं था।

‘वह जरूर वेंटीलेटर के रास्ते बाहर निकाल गया होगा,’ दादा जी ने कहा। ‘अब तक वह दूसरे डिब्बे में पहुँच गया होगा!’

शौचालय से निकलते समय, उन्होंने वहाँ खड़े यात्रियों से कहा, ‘सांप चला गया है! चिंता की कोई बात नहीं। वह एक हानिरहित, छोटा अजगर था’।

जब हम डिब्बे में पहुँचे तो दादी माँ बर्थ पर बैठी हुई थीं।

‘मैं जानती ही थी कि तुम मेरे पीठ पीछे कोई तो बेवकूफी करोगे ही,’ उन्होंने डांटा। ‘तुमने कहा था कि तुम उस जानवर को घर पर ही छोड़कर आओगे, और वह सारे समय हमारे साथ ट्रेन में था’।

दादा जी ने समझाने की कोशिश की कि इन सब से हमारा कोई लेना-देना नहीं है, पर दादी माँ नहीं मानी।

‘खैर, वह चला गया है,’ दादा जी ने कहा। ‘वह जरूर शौचालय की खिड़की से बाहर गिर गया होगा। हम देहरा से सौ मील से ज्यादा की दूरी पर हैं, इसलिए अब तुम उसे दुबारा नहीं देखोगी’।

वो बोल ही रहे थे कि ट्रेन धीमी हुई और झटका खाते हुए घर्षण के साथ रुक गई।

‘यहाँ तो कोई स्टेशन है नहीं,’ दादा जी ने अपना सर खिड़की के बाहर निकालते हुए कहा।

कोई व्यक्ति बांध की तरफ से आया, अपना हाथ हिलाता और चिल्लाता हुआ।

‘मुझे लगता है ये कोयला झोंकने वाला व्यक्ति है,’ दादा जी ने कहा। ‘मैं जाकर देखता हूँ कि क्या दिक्कत हुई है’।

‘मैं भी आता हूँ,’ मैंने कहा, और हम दोनों एक साथ रुकी हुई ट्रेन की इंजन तक पहुँचे।

‘क्या हुआ?’ दादा जी ने पूछा। ‘मैं कोई सहायता कर सकता हूँ?’ मुझे इंजन के बारे में सब पता है।



पर इंजन चालक कुछ बोल नहीं सका। और उसे दोषी भी कौन ठहराए? अजगर ने अपने आप को उसके पैरों में लपेट रखा था, और ड्राइवर जड़वत खड़ा था।

‘इसे हम पर छोड़ दो,’ दादा जी ने कहा, और, अजगर को खींचकर मेरे हाथ पर रख दिया। इंजन चालक धम्म से ज़मीन पर बैठ गया, जो डर से पीला पड़ गया था और कांप रहा था।

‘अच्छा होगा कि मैं इंजन चलाऊँ,’ दादा जी ने कहा। ‘हम लखनऊ देर से नहीं पहुंचना चाहते। तुम्हारी चाची हमारी राह देख रही होंगी!’ और जब तक कि हैरान ड्राइवर कुछ कह पाता, दादा जी ने ब्रेक छोड़ दिया था और इंजन शुरू हो चुकी थी।

‘हमने कोयला झोंकने वाले व्यक्ति को पीछे छोड़ दिया है,’ मैंने कहा।

‘कोई बात नहीं। तुम कोयला झोंक देना।’

दादा जी कि मदद करने में मैं इतना खुश हुआ, कि मैंने अजगर को ड्राइवर कि गोद में डाल दिया और कोयला झोंकने लगा। इंजन ने गति पकड़ी और जल्दी ही हम अंधेरे को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे, आकाश में चिंगारियाँ उड़ रही थीं और भाप इंजन की सीटी बिना रुके चीत्कार कर रही थी।

‘आप बहुत तेज चला रहे हैं!’ ड्राइवर ने कहा।

‘समय के विलंब को ठीक कर रहा हूँ,’ दादा जी ने कहा। ‘कोयला झोंकने वाला क्यूँ भाग गया?’ ‘वह गार्ड के पास गया था। आपने दोनों को पीछे छोड़ दिया है!’

5

दूसरी सुबह प्रातः काल, ट्रेन सुरक्षित लखनऊ पहुंची। स्पष्टीकरण की लंबी फेहरिस्त थी, पर चूंकि स्टेशन मास्टर दादा जी का पुराना दोस्त था, इसलिए सब नियंत्रण में था। हम 20 मिनट जल्दी पहुंचे थे, और जब दादा जी इंजन चालक और स्टेशन मास्टर के साथ चाय पी रहे थे, मैंने अजगर को वापस उसकी पेटी में डाल दिया और सामान उतरवाने में दादी माँ की सहायता करने लगा। पोपाई दादी माँ के कंधे पर बैठा हुआ था, और प्लेटफॉर्म की भीड़ को काफी संदेह की दृष्टि से देख रहा था। सबसे पहले उसी ने रूबी चाची को प्लेटफॉर्म पर आते हुए देखा, और अलार्म के रूप में अपनी सीटी सुनाई।

रूबी चाची जो अच्छे खाने की शौकीन थीं, पिकनिक पेटी को देखते ही उठा लिया और बोलीं, ‘यह काफी भारी है। तुम जरूर मेरे लिए कुछ लाई होगी! मैं इसे टैक्सी तक ले चलती हूँ।’

‘हमने कुछ नहीं खाया,’ मैंने कहा।

‘लगता है जैसे सदी बीत गई हो मैंने तुम्हारी दादी के हाथ का बना कुछ खाया होगा।’ और उसके बाद रूबी चाची के हाथों से उस पेटी को छुड़ाने का कोई उपाय नहीं था।



पेटी को देखकर लगा मानो मैंने ढक्कन को हिलते देखा, पर मैंने इस बार काफी जोर से बांधा था और बहुत कम संभावना थी कि वह अचानक झटके से खुल जाए।

दादा जी हमें स्टेशन के बाहर मिले और हम जल्दी ही टैक्सी के अंदर बैठ गए। रुबी चाची ड्राइवर को निर्देश दे रही थीं और हम धूल के बादल से गुजरते हुए आगे बढ़े।

‘मैं मरी जा रही हूँ ये देखने के लिए कि पेटी में क्या है,’ रुबी चाची ने कहा। ‘क्या मैं थोड़ा झांक नहीं सकती?’

‘अभी नहीं,’ दादा जी ने कहा। ‘पहले हम तुम्हारे बनाए हुए नाश्ते का आनंद लेंगे।’

पोपाई दादी माँ के कंधे पर शान से बैठा था, उसकी एक संशय वाली नज़र हिलती पेटी पर थी। जब हम रुबी चाची के घर पहुंचे तो हमने देखा कि नाश्ता डाइनिंग टेबल पर परोसा जा चुका है।

‘ये ज्यादा कुछ नहीं है,’ रुबी चाची ने कहा। ‘पर इसे हम उससे पूरा करेंगे जो आप पेटी में लाए हैं।’

पेटी को टेबल पर रखकर उन्होंने ढक्कन हटाया और अंदर झाँका। और तुरंत ही बेहोश हो गई। दादा जी ने अजगर को उठाया, उसे बगीचे में ले गए और एक अनार के पेड़ की शाखा पर लपेट दिया। जब रुबी चाची को होश आया, वे अड़ गईं कि उन्होंने पिकनिक पेटी में एक बड़ा सांप देखा है। हमने उन्हें खाली पेटी दिखाई।

‘तुम्हें भ्रम होने लगा है,’ दादा जी ने कहा। ‘तुम कुछ दिनों से बहुत मेहनत कर रही हो।’

‘पढ़ाना बहुत मेहनत का काम है,’ मैंने जोर देकर कहा।

दादी माँ ने कुछ नहीं कहा। पर पोपाई जोर-जोर से चीखने और सीटी बजाने लगा, और जल्दी ही, कुछ हद तक मजेदार रुबी चाची, और हम सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। पर सांप जरूर ही इस मज़ाक से थक गया होगा क्यूँ कि हमने उसे दोबारा कभी नहीं देखा।



अविश्वास



श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव

पत्नी— श्री लोकेश चंद्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

नए वर्ष के आगमन को लेकर हम बहुत खुश थे। नवीनता सदैव अपने आंचल में आशा, उत्साह, उन्नति का उपहार रखती है। वर्तमान से पलायन की स्थिति भविष्य की कल्पना को और सुखद बना देती है। भुवनेश्वर से पतिश्री के स्थानांतरण ने हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया। वैसे अगर भुवनेश्वर की बात की जाए तो यह शहर अपनी संस्कृति और आधुनिकता का बेजोड़ सामंजस्य स्थापित करता है। एक ओर जहाँ ओड़िशा की सभ्यता और संस्कृति है, वहीं दूसरी ओर आधुनिकता और उन्नत तकनीक उसे नया आयाम देती है। भुवनेश्वर में हमने सुखद पाँच वर्ष व्यतीत किए हैं। जय जगन्नाथ का उद्घोष और बाबा लिंगराज की उपस्थिति हमारे हृदय में सर्वदा बनी रहेगी।

अगला पड़ाव हमारा प्रयागराज, उत्तर प्रदेश है। बहुत सारी कल्पनाएँ, हर्षोल्लास के साथ हम यहाँ रचने-बसने की कोशिश कर रहे हैं। हमारी जड़ें भी यहीं की रही हैं। अतएव ऐसा प्रतीत होता है कि अपने ही घर, अपने ही प्रदेश में हम वापस आ गए हैं। भाषा वह धागा है जो सर्वप्रथम व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है। अतः भाषायी रूप से हम जुड़ चुके हैं। हर नया स्थान, परिवेश, व्यक्ति हमें नई चुनौती देता है और फिर यह हम पर निर्भर हो जाता है कि हम उसका सामना कैसे कर रहे हैं। एक ही जगह पर लंबे समय तक रहने से वह हमें अपना सा लगने लगता है या यूँ कहें कि हम उसके आदी हो जाते हैं।

प्रयागराज भी अपने आप में अनेक वर्षों की परंपरा समेटे हुए है और पवित्रता तो इसके उच्चारण मात्र से ही अनुभूत होती है। हम पवित्र जगन्नाथ धाम से पवित्र संगम नगरी आ बसे जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का अद्भूत मेल है। धीरे-धीरे हम तिनका-तिनका जोड़कर अपना आशियाना बना रहे हैं।

“भईया स्टेशन पर सही समय से पहुँचा दीजिएगा न?” बहुत ही स्पष्ट शब्दों में मैंने अपनी बात रखी। “जी बिल्कुल, 7.15 तक गाड़ी पहुँच जाएगी।” आत्मविश्वास से भरे शब्दों में गाड़ीवाले ने कहा।

गाड़ीवाले भईया से मेरा यह प्रथम परिचय था। आज संध्या 7.30 को बाबू की ट्रेन है। मैं किसी तरह से कोई भी ढिलाई नहीं चाहती थी। बाबू अर्थात् मेरा छोटा भाई जो नौकरी के सिलसिले में



प्रयागराज आया हुआ है। शनिवार की सुबह उसकी परीक्षा थी और रविवार के दिन वापसी का टिकट। बरसों पुरानी परंपरा का निर्वहन तो जैसे मेरे घरवालों का धर्म हो। लड़की के ससुराल में एक-दो दिन से ज्यादा टिकने पर शायद धर्म की हानि होती है। इसलिए इसका पालन ही कर्तव्य है। मायके वालों के आने से हृदय जितना प्रफुल्लित हो उठता है उतना ही उनके जाने की बात सुनकर भारी हो उठता है। बाबू के आने से दिन तो जैसे पंख लगाकर उड़ गए। ईश्वर उसकी मेहनत को जल्दी ही सफलता रूपी फल प्रदान करें।

बाबू सब ले लिए हो न? कोई सामान छूटा तो नहीं है न? अरे छूटेगा तो फिर हम चलेंगे पहुँचाने के लिए, पतिश्री के इन वाक्यों ने वातावरण को हल्का बना दिया। दोनों जीजा और साला अपनी बातों में मग्न थे पर मैं बार-बार समय देख रही थी कि कहीं देर न हो जाए। हुआ यूँ कि बाबू टिकट कटवाते वक्त कंप्यूज़न में प्रयागराज जंक्शन के बजाय प्रयागराज छिवकी स्टेशन का टिकट कटवा लिया जो हमारे घर से 22-23 किलोमीटर दूर है। वो तो भला हो भगवान का कि हमने ई-रिक्शा पहले ही बुक कर लिया था वरना इस नई जगह पर रात के समय भाई को सही समय पर स्टेशन पहुँचाना थोड़ी टेढ़ी खीर हो जाती है। मगर मुझे अब भी गाड़ीवाले भईया पर विश्वास न था कि वे सही समय पर स्टेशन पहुँचा देंगे। गाड़ी अपने वेग से चली जा रही थी। एक के बाद एक सड़क को हम पार किए जा रहे थे। हमें इस शहर में आए अभी डेढ़ महीने ही हुए हैं इसलिए यहाँ के जगहों से हमारी जान पहचान कुछ ठीक से न हो सकी है।

पतिश्री ने फोन पर मैप लगा रखा था ताकि समय और दूरी का सही अनुमान लगाया जा सके। पतिश्री और भाई जितने रिलैक्स लग रहे थे, मैं उतनी ही नर्वस थी कि पता नहीं सही समय से पहुँचा पाएगा या नहीं। पहुँचने की होड़ में किसी को ठोक न दें। इसका डर ज्यादा ही सताने लगा था क्योंकि जैसे-जैसे समय बढ़ रहा था गाड़ी की गति और सड़कों पर लापरवाही बढ़ती ही जा रही थी और इस वजह से मेरी परेशानी भी। सभी एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में दिखाई दे रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो दुनिया एकाएक तेज गति से घूम रही हो।

ईश्वर की अनुकंपा से गाड़ीवाले भईया ने अपनी गाड़ी स्टेशन पर ठीक उनके कहे गए समयानुसार 7.15 बजे तक पहुँचा दिया। भाई को नम आंखों से विदा कर हम गाड़ी में वापस बैठे। 'टाइम से पहुँचा दिया ना भईया', पीछे मुड़कर गाड़ीवाले ने कहा। हमने भी हँसते हुए 'हाँ भईया' कह दिया। गाड़ीवाले भईया के पीछे मुड़ने पर मैंने उन्हें पहली बार देखा। काली-काली छोटी आँखें, तनी हुई भौंहें, चिपटी नाक, बड़ा ललाट, साँवला रंग और मुँह में पान चबाते हुए गाड़ीवाले भईया। हल्के बादामी रंग की



कमीज़, काले रंग की पैंट और आत्मविश्वास से भरे गाड़ीवाले भईया। खुद से ज्यादा सजी-धजी उनकी चारपहिया यानी ई-रिक्शा थी।

गाड़ी दौड़ने लगी, अपनी रफ़्तार को बढ़ाते हुए। मगर इस बार रफ़्तार में हड़बड़ाहट न थी। गाड़ी चलते-चलते एक दुकान पर रुकी। गाड़ीवाले भईया चुपचाप उतरकर हड़बड़ी में आगे बढ़े। मेरी दुकान पर नज़र गई तो दुकान मिठाई और समोसे की थी तथा सामने एक आदमी कुल्हड़ वाली चाय बेच रहा था। वैसे तो चाय पीने की मुझे आदत नहीं है पर कुल्हड़ वाली चाय की बात ही कुछ और होती है। शायद मिट्टी की सोंधी खुशबू और उसका स्वाद अनायास ही मुझे अपनी ओर खींचता है।

मैंने पतिश्री को चाय की दुकान दिखाई और मेरे भाव को समझते हुए एक आदर्श पति की तरह वे दुकान की ओर आगे बढ़े बीवी की ख्वाहिश पूरी करने। उनके जाते ही गाड़ीवाले भईया एक प्लेट में दो गरमागरम समोसा लेकर मेरे सामने आए। मैं इस स्थिति के लिए तैयार नहीं थी। “भाभी जी! लीजिए समोसे खाइए, यहाँ का समोसा बहुत प्रसिद्ध है।” गाड़ीवाले भईया ने कहा। ‘जी’ झिझकते हुए मैंने प्लेट ली और मन ही मन सोचने लगी, इनको तो मैंने केवल चाय के लिए कहा था पर समोसे की क्या जरूरत थी, वह भी गाड़ीवाले भईया के हाथों भिजवा दिया। तब तक एक और प्लेट लेकर पतिश्री मेरे पास आए। मैं कुछ कहती कि इसके पहले उन्होंने मुझे बताया कि “यह समोसे गाड़ीवाले भईया ने हमारे लिए पहले से ही ऑर्डर कर दिया था और पैसे भी पूरे दे दिए हैं।” मुझे तो यह बात बिल्कुल भी पसंद नहीं आई। इन्होंने भी कई बार गाड़ीवाले भईया को मना किया पर उन्होंने एक न सुनी। समोसा खत्म होने के पहले ही ठंडा पानी भी गाड़ीवाले भईया ले आए। “भाभी जी! लीजिए” कह कर मेरे हाथों में पकड़ा दिया। इतना अपनापन एक अजनबी से पाकर मुझे अच्छा न लगा। मगर गर्मी की वजह से गला भी सूख रहा था। इतने में ही पतिश्री चाय भरी दो प्याली मेरी तरफ लाए और बताया कि इन सब के रूपए गाड़ीवाले भईया ने पहले ही दे दिए हैं। मेरी असहजता को भाँपते हुए पतिश्री ने झट कहा “चाय का मजा लो। गाड़ीवाले को नाश्ते और चाय का पैसा जोड़कर दे दूँगा। अपनत्व और इज्जत के साथ वो बार-बार खाने का आग्रह कर रहा थे। मना करने का मन न हुआ परंतु किसी का भी गलत फ़ायदा नहीं उठाना चाहिए। मैं भाड़े के साथ कुछ एक्स्ट्रा पैसे भी दे दूँगा। बेचारा समय से पहुँचा दिया।” पतिश्री की इन बातों ने मुझे थोड़ा सहज किया।

मेरे मन में गाड़ीवाले के प्रति कुछ अच्छे विचार नहीं थे। आजकल की स्वार्थी दुनिया में जहाँ लोग अपने मतलब के लिए कुछ भी कर सकते थे, वहीं यह भईया इतने मेहरबान क्यों है हम पर। अब उसकी एक-एक हरकत मुझे खटकने लगी। जिस रास्ते से वह हमें स्टेशन ले गए थे, वह दूसरा रास्ता था



परंतु वापसी के वक्त हमें अलग रास्ते से ले आ रहे थे। स्टेशन जाते वक्त जो रास्ता था वह काफी चौड़ा और अच्छी-खासी रोशनी वाला था, जहाँ खूब चहल-पहल थी पर आते वक्त रास्ता काफी संकरा और अंधकारमय था। कई बार तो वह गलियों तक में घुस जा रहे थे। रात ज्यादा होने लगी थी और वहाँ के आसपास के वातावरण की वजह से कुछ ज्यादा ही भय सा प्रतीत हो रहा था। मैं बहुत डर ही गई थी। बार-बार शक की निगाहों से उसे (गाड़ीवाले को) देख रही थी और पतिदेव को इशारे कर रही थी पर बार-बार वह मुझे चुप रहने का इशारा कर रहे थे। मेरी बेचैनी बढ़ती देख उन्होंने फोन में मैप दोबारा खोल लिया जिससे कि हम किस क्षेत्र से गुज़र रहे हैं, उसका ठीक-ठाक पता चल सके। बार-बार मेरे ज़हन में यह बात आ रही थी कि कोई हम पर क्यों इतना मेहरबान होगा! फिर मैं समोसे वाले की दुकान को याद करने लगी कि कहीं ऐसा तो नहीं कि वह हमें कुछ नशे-वशे वाली चीज खिलाकर कुछ.....।

मन में बहुत सारे प्रश्न आ रहे थे जिसका मेरे पास कोई जवाब नहीं था। जब गाड़ी कोई ऐसी सड़क से होकर गुज़र रही थी जहाँ अंधेरा होता था, मेरा कलेजा धक से हो रहा था। मैं एक हाथ से अपनी बेटी को जोर से पकड़ लेती और दूसरे से पतिश्री का हाथ। बस भरोसा था कि पतिश्री साथ में है पर मैं बार-बार उनसे अन्य विषय पर बात कर रही थी ताकि हर पल चेक कर सकूँ कि उसने कुछ अंड-संड तो नहीं खिला दिया है।

“यह फलाईओवर देखो, इस फलाईओवर से होकर ही मैं रोज ऑफिस जाता हूँ।” इनके इस एक वाक्य ने मुझे वह ठंडक पहुँचाई जो इस पूरी गर्मी के मौसम में अब तक न मिली थी। मैंने भी गौर से उस फलाईओवर को निहारा जैसे किसी अनजानी भीड़ में हम वर्षों पहले बिछड़े किसी व्यक्ति को ढूँढते हैं। मैंने लंबी साँस भरी क्योंकि अब हम अपने इलाके में प्रवेश कर रहे थे। देखते ही देखते हम घर पहुँच चुके थे। कहे के मुताबिक ही इन्होंने गाड़ीवाले भईया को रुपए बढ़ा कर दिए। हँसते-हँसते गाड़ीवाले भईया ने बिना देखे स्वीकार किया। “फिर जरूरत पड़े तो बताना भाभी जी”, इतना कहकर गाड़ीवाले भईया ने अपनी गाड़ी स्टार्ट की और चल दिया। परंतु मेरे लिए एक प्रश्न छोड़ गए कि क्या एक अनजान व्यक्ति पर विश्वास करना इतना मुश्किल है या यह अविश्वास उसकी गरीबी के कारण था कि एक रिक्शावाला हमें नाश्ता-पानी क्यों करवाएगा भला? कई बार व्यक्ति को हम उसकी नियत से नहीं बल्कि उसकी हैसियत से मापते हैं। समाज में फैला उसका रुतबा, उसकी पैठ, उसका पद ही उसके कद का निर्धारण करता है। हालांकि उसके इन सब चीजों से हमारा प्रत्यक्ष रूप से कोई लेना-देना नहीं होता पर हमारी नज़र में वही बहुत ऊँचा होता है। वहीं दूसरी ओर एक गरीब व्यक्ति जो अपनी मेहनत से अपना व अपने परिवार का पेट भले पालता हो, हमें उसकी ईमानदारी पर कभी भरोसा नहीं होता है। हम यह निर्णय ले



लेते हैं कि एक गरीब व्यक्ति अपने हैसियत से बढ़कर कार्य करे तो उसमें अवश्य ही उसका स्वार्थ निहित होगा। लेकिन हम भूल जाते हैं कि हो सकता है कि उसके जेब न भरे हों परंतु उसके मन में ईच्छाएँ और प्रेम अवश्य भरा हो सकता है। गाड़ीवाले भईया ने अपनी क्षमता के अनुसार यदि निःस्वार्थ भावना से कुछेक पैसे खर्च भी कर दिए तो इसमें शंका का कोई स्थान नहीं होना चाहिए था। एक व्यक्ति अमीर या गरीब अपने व्यक्तित्व और अच्छी नियत के वजह से होता है न कि अपनी हैसियत के वजह से.... ।

और यह तो शायद हमारी सोच पर निर्भर करता है। परंतु इतना जरूर है कि इस घटना ने मुझे सतर्क व आशावान जरूर बना दिया है। आज के समय में भी विश्वास करना इतना मुश्किल नहीं है।



मेरे प्यारे छंगा चाचा



सुश्री स्वाती वर्मा
सहायक लेखाधिकारी

यह कहानी कानपुर के एक छोटे से मुहल्ले लक्ष्मीपूर्वा की है। उस मुहल्ले में एक गरीब परिवार था। इस परिवार में एक दंपति और उनकी चार पुत्रियाँ और दो पुत्र थे। उनके सभी बच्चों में पढ़ाई में उनकी दूसरे नंबर की पुत्री होशियार थी। उसका नाम था 'खुशी'। वो मुहल्ले के अन्य बच्चों को मुफ्त में ट्यूशन पढ़ाती थी। सभी छोटे-बड़े उससे प्रेम करते थे। उसी मुहल्ले में एक बहुत ही हट्टे-कट्टे तंदुरुस्त बुजुर्ग रहते थे जिनको सब छंगा चाचा कहकर पुकारते थे। उनके दायें हाथ में छः उँगलियाँ थीं शायद इसी कारण बच्चे उनको छंगा चाचा बुलाते थे। उनका बहुत प्रताप था मुहल्ले में। वे अपने समय के बहुत बड़े गुंडे माने जाते थे। उनकी बड़ी-बड़ी मूँछें, तगड़ा शरीर और भारी आवाज़, किसी पहलवान से कम नहीं थी। सभी उनकी इज्जत करते थे और कुछ तो उनसे डरते भी थे। वे सभी की सहायता के लिए तत्पर रहते थे। उनकी कई राशन की दुकानें थी इसलिए वे धन-धान्य से पूर्ण थे। उनकी पत्नी का देहांत बहुत ही पहले हो गया था एवं उनके दो बच्चे दूसरे शहर में पढ़ाई करने के लिए गए थे। परंतु उनके बच्चे बहुत ही कम उनसे मिलने के लिए आते थे। अपने बुढ़ापे में उनको अपनों की कमी बहुत खलती थी लेकिन उनके होठों पे हमेशा हंसी ही दिखती थी।

उनकी एक आटा चक्की थी जो खुशी के घर के बिलकुल बगल में थी। छंगा चाचा खुशी को अपनी बेटी की तरह मानते थे। वे अनपढ़ थे इसलिए अपने सारे दस्तावेज़ खुशी से पढ़वाते थे और कभी अपने बच्चों को चिट्ठी लिखनी हो तो वो भी खुशी से ही लिखवाते थे। सन 1970 में मुहल्ले के एक-दो घरों में ही बिजली का कनेक्शन था। खुशी के घर में भी बिजली नहीं थी। वह दसवीं कक्षा की छात्रा थी और रोज़ घर का काम खत्म करने के बाद तेल के दिये की रोशनी में पढ़ाई करती थी।

एक दिन घर में बहुत शोर हो रहा था और अगले दिन उसकी परीक्षा थी इसलिए वह घर के बाहर एक स्टूल पर बैठकर तेल के दिये की रोशनी में पढ़ाई कर रही थी। तभी वहाँ से छंगा चाचा गुज़रे। उन्हें इस बात का बिलकुल अंदेशा नहीं था कि खुशी के घर में बिजली नहीं है। उन्होंने खुशी से पूछा, "बिटिया, तुम बाहर अंधेरे में क्यों पढ़ रही हो, बिजली नहीं आ रही है क्या?" इस पर खुशी बोली, "नहीं



चाचा जी, घर में बिजली का कनेक्शन नहीं है। मैं रोज़ दिये की रोशनी में पढ़ती हूँ। आज घर में थोड़ा शोर हो रहा था तो सोचा बाहर पढ़ लूँ, कल मेरी गणित की परीक्षा है न।”

यह सुनकर छंगा चाचा आश्चर्यचकित हो उठे। आज तक कभी उनको यह मालूम ही नहीं चला था कि जिस बिटिया से वो चिट्ठियाँ लिखवाते थे, जो पूरे मुहल्ले के बच्चों को मुफ्त में ट्यूशन पढ़ाती थी, वो खुद दिये की रोशनी में पढ़ती है। शायद इस कारण क्योंकि खुशी हमेशा अंदर ही रहती थी और स्कूल जाते समय या ट्यूशन पढ़ते समय ही छंगा चाचा को दिखती थी। उन्हें बहुत दुख हुआ। उन्होंने तुरंत अपने एक नौकर को बुलाया और उसे तार और बल्ब लाने को कहा। तुरंत ही उन्होंने अपनी चक्की से एक तार खिचवाकर खुशी के घर में बिजली का प्रबंध करवाया और खुशी से बोले— “बिटिया, आज के बाद तुम कभी भी अंधेरे में नहीं पढ़ोगी।” खुशी की आँखों में आँसू आ गए और वो चाचा से जाकर लिपट कर रोने लगी। छंगा चाचा ने उसे चुप करवाया और कहा कि “नहीं बिटिया, रो मत, तुम्हें तो डॉक्टर बनना है। जाओ पढ़ाई करो। मुझे यकीन है कि तुम अच्छे अंक ही लाओगी।” फिर वे अपने घर चले गए और खुशी अपनी पढ़ाई में लग गयी।

खुशी रोज़ घर का काम जल्दी खत्म करने के बाद अपनी कॉपी-किताबें लेकर बल्ब के नीचे पढ़ती और अगले दिन परीक्षा देने जाती। उसकी परीक्षा बहुत अच्छी गयी। जब कभी छंगा चाचा दिखते तो उनसे मुस्कुराकर नमस्ते करती और उनके पत्र व अन्य ज़रूरी दस्तावेज़ उनको पढ़कर सुनाती।

कुछ दिन बाद खुशी की दसवीं की परीक्षा का परिणाम आया। उसने बहुत अच्छे अंकों से परीक्षा पास की थी। वह अपने स्कूल में सबसे ज्यादा अंक पाने वाली पहली छात्रा थी। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। उसे जैसे ही पता चला उसने सोचा कि मैं सबसे पहले चाचा जी को यह ख़बर सुनाऊँगी। उनको कितनी खुशी होगी। मंद-मंद मुस्कुराते हुये वह चाचा जी का इंतज़ार करने लगी। बार-बार बाहर जाकर देखती कहीं चाचा जी तो नहीं आए हैं लेकिन उनका कोई पता नहीं था।

अगली सुबह छंगा चाचा का एक नौकर चक्की खोलने आया। उसने शटर जैसे ही खोला चक्की की बाएं तरफ कोने में चाचा जी बैठे थे। उनकी आँखें बंद थी और दायें हाथ में एक लिफाफ़ा था जो बंद था। नौकर तुरंत दौड़ा और चाचा जी को पुकारने लगा लेकिन वह बिलकुल नहीं हिले। फिर वह उनके पास गया और जैसे ही हाथ लगाया तो वे ज़मीन पर गिर गए। थोड़ी ही देर में वहाँ भीड़ इकट्ठा हो गई। छंगा चाचा इस दुनिया को छोड़कर जा चुके थे।

आवाज़ें सुनकर खुशी बाहर निकली। चक्की के सामने भीड़ थी। उसे कुछ समझ नहीं आया। वह आगे बढ़ी तो देखा कि चाचा जी ज़मीन पर पड़े हैं। कुछ औरतों ने रोना शुरू कर दिया था। वह घबरा



गई। पास गयी तो उसे यकीन हो गया कि छंगा चाचा इस दुनिया से जा चुके थे। एकाएक उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। किसी बुजुर्ग ने उसके पास आकर उसे वही लिफाफा पकड़ाया और कहा “बिटिया, देख तो एमा का लिखा है?” घबराए हाथों से खुशी ने लिफाफा खोला और भीगी आँखों से पढ़ते हुये उन बुजुर्ग को खत पढ़कर सुनाने लगी “नमस्ते पिताजी, इस बार आना न हो पाएगा। मुझे और छोटे दोनों को एक ज़रूरी कार्य से दिल्ली जाना पड़ रहा है।”

उस खत में बस ये दो पंक्तियाँ लिखी थीं। दो साल में पाँचवी चिट्ठी थी जिसमें वही बात लिखी थी। खुशी को याद आया कि जब भी चाचा जी उससे खत पढ़वाते थे, यही दो पंक्ति सुनते थे और उनके मुख पर हल्की सी मुस्कान आ जाती थी जैसे मानो कि वे पहले से जानते हो कि खत में क्या लिखा था। परंतु आज ज़मीन पर उनका शरीर देखकर वह यह सोच रही थी कि क्या चाचा ये जानते थे कि खत में क्या होगा या वह सुबह होने का इंतज़ार कर रहे थे कि कब वे उससे खत पढ़वाएं।

वह भी अपने परीक्षा-परिणाम की खुशी उनके साथ बाँट नहीं पाई। वह यह सोच ही रही थी कि एक एम्ब्युलेन्स उसके सामने आ रुकी। छंगा चाचा के शव को उसमें रखा गया और देखते ही देखते वे खुशी की आँखों से ओझल हो गए।



संस्मरण



श्री शशांक त्रिवेदी
लेखाकार

“अम्बाला छावनी रेलवे स्टेशन पर आपका हार्दिक स्वागत है !”

स्टेशन पर उद्घोषिका की आवाज़ गूँजी और मैं अपना बैग लेकर उतरने के लिए तैयार हो गया। स्टेशन के बाहर थोड़ी दूर एक पुराना होटल था। पूछने पर पता लगा उधर कमरे सस्ती दर पर मिल जाते हैं। मैंने उसी होटल का रुख किया।

अगले दिन सुबह तड़के 4 बजे ही मैं कमांड हॉस्पिटल पहुँच गया। इधर दूसरे लड़के भी अंधेरा छँटने के साथ ही किसी न किसी दिशा से आते प्रतीत हो रहे थे। लंबे समय बाद मैं दोबारा इस शहर आया था। वायु सेना में अनंतिम चयन से पहले प्रथम चरण का मेडिकल होना था। आमतौर पर ऐसी कोई भी जगह जहाँ आपके हमउम्र लोग मौजूद हों, उनसे बातचीत और चर्चा करना लाज़िमी होता है। मैं हालाँकि इन बातों में अपवाद था। अभी सुबह के सात बज चुके थे। सभी अभ्यर्थी मुख्य द्वार के खुलने के इंतजार में थे कि कब दरवाजा खुले और अंदर घुसें।

सूर्य निकल आया था और सड़क के किनारे की घास पर पड़ी ओस अब धीरे-धीरे सूख गई थी। सामने सड़क पर कुछ स्त्रियाँ और पुरुष भिन्न-भिन्न प्रजातियों के कुत्ते लिए टहल रहे थे। लकड़ी की छोटी सी दुकान में एक आदमी चाय बना रहा था, सुबह से उसके पास बैठा मैं तकरीबन 6-7 चाय पी चुका था। टहलने वाले पुरुषों में से भी एकाध उसके पास चाय पीने लगे और वे संभवतः उसके नित्य के ग्राहक थे। उनमें से एक ने कुत्ते टहलाने को लेकर अमेरिका में हुए शोध का हवाला देते हुए बताया कि कुत्ते टहलाने वाले लोग हृदय रोग से ग्रस्त न ही होते और इसलिए वो भी रोज कुत्ता टहलाने जाता है। दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए उस दूसरे आदमी ने बताया कि वह भी पिछले कई साल से कुत्ता लेकर टहलने जाता है फिर भी हृदय रोग संबंधी दवाई नित्य खाता है। उनके इस वार्तालाप को बीच में ही छोड़कर मैं उठ गया क्योंकि प्रवेश करने के लिए लाइन लगनी शुरू हो गई थी।

सुबह से लेकर शाम तक चिकित्सकीय परीक्षण की प्रक्रिया जारी रही। कुछ ही देर में परिणाम आने वाला था। मेरी हालत किसी भी परिणाम की प्रतीक्षा करने से पहले बेहद खराब हो जाती है, भले ही



मैं उसमें अव्वल रहूँ लेकिन बेचैनी सबसे ज्यादा मुझे ही होती है। सेना में भर्ती होना मेरे बचपन का सपना था और जिसके पूरे होने से मैं सिर्फ एक कदम दूर था। पूरे दिन लगभग 11 घण्टे तक जब तक मेडिकल की प्रक्रिया चली, तब तक हमारे बदन पर कपड़ों के नाम पर सिर्फ अधोवस्त्र थे। वातानुकूलित कमरों में जाँच के लिए जाते वक्त हालत और भी खराब हो जाती थी।

कुछ ही क्षणों में इंतजार की घड़ियाँ समाप्त हुईं और एक अफसर सामने मंच पर परिणाम की घोषणा करने के लिए प्रकट हुआ। हम सब भावनाओं को काबू किए परिणाम सुनने के लिए उतावले हो रहे थे। उसने उन अभ्यर्थियों के नाम बोलने शुरू किए जो सफल हो गए थे। जैसे-जैसे वो नाम पुकारता था, मेरा कलेजा मुँह को आ रहा था। आखिरी नाम की भी घोषणा हुई लेकिन मेरा नाम नहीं पुकारा गया। मेरा दिल बैठ गया। तमाम आशाओं, उम्मीदों और सपनों पर तुषारापात हुआ। सोते, जागते, उठते, बैठते या फिर चाहे जिस काम में व्यस्त रहा, हर वक्त सेना में जाने की बात मेरे हृदय के किसी कोने में बनी रहती। यदि अर्धरात्रि में किसी वजह से नींद उचटती तो भी यही ख्याल रहता कि सेना में ही जाना है। मैं सोचता था कि जब तक शरीर में क्षमता है और ऊर्जा है क्यों न इसे देश के लिए खर्च किया जाए। इस वजह से मैं नौसेना और तट रक्षक बल के 6 इम्तिहान दे चुका था। लिखित परीक्षा और शारीरिक दक्षता में सफल होने के बावजूद मुझे मेडिकल में हर बार अलग-अलग कारण बताकर बाहर कर दिया जाता लेकिन मैंने उम्मीद नहीं छोड़ी थी। ये सातवां और अंतिम अवसर था मेरे लिए जो कि मैं सेना में जा पाता क्योंकि इसके बाद उम्र के दायरे से बाहर हो रहा था। इस बार असफल होने के बाद जैसे मैं संवेदना शून्य हो गया था। उस अफसर का चेहरा मैं ताउम्र नहीं भूल सकता। मुझे गुस्सा आया कि उसका मुँह तोड़ दूँ और पूछूँ मेरा नाम क्यों नहीं है?

जीवन में हर चीज आपके इच्छानुसार होना संभव नहीं है लेकिन मेरे जीवन में अभी तक कोई भी घटना मेरे अनुसार नहीं हुई थी। उस अफसर ने असफल अभ्यर्थियों को थोड़ी देर सांत्वना दी और सफल अभ्यर्थियों को आगे के निर्देश देने लगा और फिर सब लोगों की छुट्टी कर दी। असफल लड़के भी उतने ज्यादा दुःखी नहीं लग रहे थे जितना मैं था। पिताजी सुबह से फोन किए जा रहे थे और मैं भी किसी तरह नज़र बचाकर उन्हें ख़बर देता रहता था। हम सभी ने अपना बोरिया-बिस्तर समेटा और मुख्य द्वार से बाहर आ गए। काफी अँधेरा हो गया था। छावनी की लाइटें जल चुकी थीं। मौसम धीरे-धीरे सर्द हो रहा था। मेरी संवेदनाएं मानो मृत हो गई थीं। हृदय तीव्र विषाद से भरा हुआ था। मैं सोच रहा था कि घर से मम्मी या पिताजी का फोन आएगा तो क्या जवाब दूँगा क्योंकि सबको मेरी सफलता की उम्मीद थी। बाहर निकलकर सभी लड़के अलग दिशाओं से अपने-अपने साथ आए हुए लोगों के साथ चले गए और



मैं अकेला रह गया।

मोबाइल से ट्रेन का स्टेटस चेक किया तो अभी कई घंटे बाकी थे इसलिए मैंने पैदल ही स्टेशन का रुख किया। इस बीच मम्मी का फोन आया और मैंने उन्हें बहुत धीरे से बताया कि मैं फेल हो गया। मम्मी ने इस बात को बहुत ही हल्के में लिया और कहा कोई बात नहीं आगे तैयारी करो। अगर थोड़ी देर और बात करता तो निश्चित ही रोने लगता। जैसे ही फोन काटा, काफी देर से थमा हुआ आँसुओं का बाँध टूट गया। एक अँधेरी सड़क पर, जहाँ की लाइट संभवतः खराब थी, उसके पास सीमेंट की बेंच पर बैठा मैं रोए जा रहा था। तकरीबन आधे घंटे तक उसी हालत में रहने के बाद जब दिल कुछ हल्का हुआ तो मैं उठा और लंबी साँस लेकर आगे चल दिया।

पिताजी हालाँकि शुरुआत से ही दुष्कर और अनुशासित जीवन शैली के कारण मेरे सेना में जाने के पक्ष में नहीं थे फिर भी मेरी ज़िद के आगे उन्होंने न चाहते हुए भी सहमति दे दी थी।

मैं खुद को मेडिकल में फिट किए जाने के प्रति पूर्णतः आश्वस्त था लेकिन उस अप्रत्याशित परिणाम ने मुझे तीव्र ठेस पहुँचाई। हालाँकि उस नैराश्य से निकलने में मैंने ज्यादा वक्त नहीं लिया और स्टेशन पर आ गया। ट्रेन मेरे गंतव्य के नजदीकी स्टेशन तक जाती थी सो मैं वहीं का टिकट लेकर बैठ गया। ये एक एक्सप्रेस ट्रेन थी लेकिन यात्रियों की संख्या बहुत ज्यादा नहीं थी। जब कभी भी मैं ट्रेन में यात्रा करता हूँ तो अधिकांश लोगों की तरह मैं भी सीट पर खिड़की की तरफ बैठना पसंद करता हूँ जो कि मुझे आसानी से मिल गई थी।

लगभग एक घंटे की यात्रा के बाद स्टेशन पर जब ट्रेन ठहराव हुआ तो एक सज्जन ऊपर चढ़े। उनकी उम्र लगभग 50 वर्ष रही होगी, कनपटी के बाल सफेद थे और लंबाई औसत से कुछ अधिक थी। उम्र के बावजूद स्वस्थ और तंदुरुस्त दिखते थे। मेरे सामने वाली सीट पर किनारे बैग रखकर वे बैठ गए।

अर्धरात्रि का समय हो रहा था। सभी यात्री उनींद से लग रहे थे। गंतव्य तक पहुँचने से पहले नींद से लड़ना भी एक मुश्किल काम है। मैं कई बार रात में नींद के कारण अपने गंतव्य से आगे निकल चुका हूँ। हालाँकि आखिरी स्टेशन आपका गंतव्य हो तो बात और है।

खैर, मैंने खिड़की खोली। कोहरे वाली उस सर्द रात में हवा का तीव्र झोंका अंदर आया। सहयात्रियों को ये असुविधाजनक लगा तो मैंने खिड़की बंद कर दी। अभी कुछ समय पहले जो सज्जन ट्रेन पर चढ़े थे, ने बैग से एक अख़बार निकाला और पढ़ने लगे। बगल में बैठे आदमी ने भी अख़बार के दूसरी ओर लिखी ख़बर पढ़ने की कोशिश की जो यूँ थी—

“कुपवाड़ा में सेना ने घुसपैठ की कोशिश नाकाम की, 4 जवान शहीद”



“ये साला पाकिस्तान कभी सुधरेगा नहीं, बराबर हमारे यहाँ घुसपैठ कराता है!” वो आदमी ख़बर पढ़कर ज्ञान बघारने लगा।

उन सज्जन ने अख़बार को एक तरफ़ करते हुए इसी मुद्दे पर चर्चा शुरू कर दी। अन्य यात्री भी इस वार्तालाप में कभी-कभार शामिल हो जाते थे। न जाने क्यों उन सज्जन की बातों से मुझे प्रतीत हुआ कि उन्हें सेना से चिढ़-सी है।

“अरे! जवान तो मरता ही है। उसका काम ही है मरना। उन्हें मरने के ही पैसे दिए जाते हैं..!” उन्होंने शिकायती लहजे में कहा।

अभी तक मैं शांति से उनके वार्तालाप को सुन रहा था। अब मैं भी उस वाक्युद्ध में कूद पड़ा। मैंने उन्हें कठोर शब्दों में उत्तर दिया “आप क्या जानते हैं सेना के बारे में? अगर जवान न हों तो क्या आप यहाँ इस ट्रेन में आधी रात को सेना की बुराई कर पातें?” और भी कई बातें कहीं जिन्हें सुनकर वे सिर्फ़ मुस्कुराकर रह गए और कोई प्रतिक्रिया ज़ाहिर नहीं की।

दुनिया में ऐसे बेहद कम लोग अस्तित्व रखते हैं जो अपनी गलती बग़ैर कोई शर्त स्वीकार करने की क्षमता रखते हों। कितना सहज मानव स्वभाव है कि हम अपने गलत कृत्य को भी न्यायोचित ठहराने के लिए कोई न कोई युक्ति खोजने का प्रयास करते हैं या फिर उसे किसी अन्य के साथ जोड़ देते हैं।

उन्होंने पतलून ऊपर करते हुए मुझे नीचे की ओर इशारा किया। उनका एक पैर कटा हुआ था। उन्होंने बताया कि एक सैन्य संघर्ष के दौरान उन्हें अपनी एक टाँग गंवानी पड़ी। मुझे काटो तो खून नहीं। मैं अपने कहे शब्दों पर बेहद शर्मिदा था। उनसे विनम्र शब्दों में क्षमा माँगी। प्रत्युत्तर में उन्होंने भी स्वीकारा कि सेना के बारे में बात करने का उनका लहज़ा थोड़ा सा असभ्य था। रास्ते भर सैन्य जीवन के उनके अनुभव सुनता रहा। उनका स्टेशन आ गया था। स्नेह से मुझे दुलारते हुए वे नीचे उतरे। सजल नेत्रों से मैं उन्हें यात्रियों की भीड़ में विलीन होते देखता रहा।

ट्रेन के आगे जाने का सिग्नल हो चुका था.....



सरपंच काका



श्री अमीन अली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सरपंच काका! आसपास के कई गाँवों में उनकी ख्याति इसी नाम से थी। सरपंच काका का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। उनके पिताजी कानपुर में मजदूरी किया करते थे। उनका बचपन वहीं व्यतीत हुआ था। जन्म के 10 वर्ष बाद ही उनकी माँ का निधन हो गया। उसके बाद वे अपने पिता जी के साथ गाँव लौट आए। उनके पिता जी ने यहाँ पर बांस से वस्तुएँ बनाने का अपना पुश्तैनी कार्य प्रारम्भ किया। वे लोग बांस की वस्तुएँ बनाते और बाजार में जाकर इसे बेच देते थे। इससे जो पैसा मिलता उससे खाने-पीने की वस्तुएँ लाते। इस प्रकार किसी तरह उनका जीवन बसर हो रहा था। गाँव के पास स्थित स्कूल से उन्होंने कक्षा 8 तक की शिक्षा पूरी की। वे पिता जी के काम में उनका हाथ बटाते थे। लगभग 15 वर्ष की उम्र में उनकी शादी हो गई। उनकी पत्नी भी उनके पुश्तैनी काम में उनका बराबर सहयोग करती थीं। उनके तीन पुत्र और 2 पुत्रियाँ थीं। बच्चे जब कुछ काम करने लायक हुए तो वे भी काम में उनका हाथ बटाने लगे। घर की आर्थिक हालत देखकर बड़ा बेटा कल्लू दिल्ली चला गया जहाँ वह किसी फैक्ट्री में काम करने लगा। उसके काम करने से घर की आर्थिक स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ। कुछ दिन बाद बड़े बेटे की शादी हो गई और जल्दी ही घर में बच्चे की किलकारियाँ गूँजने लगी। बच्चे के आगमन से सभी खुश थे।

किन्तु किसे पता था कि इस खुशी के बाद एक तूफ़ान उनका इंतज़ार कर रहा है। शादी के 2-3 वर्ष बाद होली के अवसर पर कल्लू घर आ रहा था। रास्ते में किसी बात को लेकर कुछ लोगों से कहासुनी हो गई। वे लोग नशे में धुत्त थे। उन लोगों ने उसे बहुत मारा और उसके पेट में तीन-चार बार चाकू घोंप दिया जिससे उसकी आंत बाहर निकल आई। यह देखकर उनका नशा छू मंतर हो गया और वे लोग वहाँ से भाग निकले। आस-पास मौजूद लोगों ने पुलिस को फोन किया। पुलिस ने आनन-फानन में उसे सफदरगंज अस्पताल में भर्ती किया। उसके बचने की उम्मीद बहुत कम थी। घर वालों को जब ये बात पता चली तो हाहाकार मच गया। आनन-फानन में सरपंच काका अपने साले के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गए। वहाँ पर बेटे का 2-3 महीने तक मुफ्त में इलाज हुआ। जब बेटे की



हालत में थोड़ा सुधार हुआ तो वे उसे घर ले आए। बेटे का हष्ट-पुष्ट शरीर सूखकर कांटा हो गया था। उसकी हालत देखकर माँ का कलेजा मुंह को आ गया। उसकी हालत ऐसी थी कि कमजोर दिल वाले उसे देखने से भी डर रहे थे। शरीर चारपाई से चिपक गया था। माँ-बाप और बीवी ने बहुत सेवा की। पैसे इतने थे नहीं कि वे रोज-रोज ड्रेसिंग के लिए डॉक्टर का इंतजाम कर पाते। इस कारण वे सब लोग ही उसकी ड्रेसिंग करने लगे। घाव काफी बड़ा था किन्तु धीरे-धीरे भरने लगा था। कुछ महीनों बाद बेटा ठीक हो गया। अब वह गाँव में ही रहकर घरों की रंगाई-पुताई का काम करने लगा। उसका काम अच्छा चल रहा था। अब घर की हालत फिर से ठीक हो रही थी। छोटे भाई भी थोड़ा बहुत कमाने लगे थे। किन्तु अब घर में आए दिन झगड़े होने लगे थे। कल्लू अपने माँ-बाप को गालियाँ देता था। कभी-कभी तो उनसे मार-पीट भी करता था। एक दिन इसी अंतर्कलह की वजह से उसकी पत्नी ने फाँसी लगा ली। घर वालों ने किसी तरह दरवाजा तोड़कर उसे बाहर निकाला। उसकी जीभ बाहर आ गई थी किन्तु सांस चल रही थी। आनन-फानन में उसे प्रतापगढ़ के सरकारी अस्पताल ले जाया गया। जहाँ डॉक्टरों ने उसे इलाहाबाद रेफर कर दिया। जान तो बच गई किन्तु शरीर लकवाग्रस्त हो चुका था। एक बार फिर से सरपंच काका और उनकी पत्नी ने बड़े बेटे की तरह बहू की भी खूब सेवा की। उनकी सेवा से बहू की सेहत में काफी सुधार हुआ लेकिन अभी भी उसको चलने-फिरने और बोलने में समस्या होती थी।

घर की ऐसी हालत देखकर उनका मँझला बेटा बबलू चंडीगढ़ काम की तलाश में चला गया। वहाँ वह अपने किसी रिश्तेदार के साथ पेंटिंग का काम करने लगा। उसका व्यवहार अपने माँ-बाप के साथ अच्छा था। वह उन्हें समय-समय पर पैसा भेजता रहता था। कुछ समय बाद उसकी शादी हो गई। उसकी पत्नी का स्वभाव अपने सास-ससुर के प्रति अच्छा नहीं था। उसके आने से घर में लड़ाई-झगड़ा बढ़ गया था। इस लड़ाई झगड़े की वजह से बबलू मानसिक रूप से बीमार रहने लगा। वह अजीब-अजीब सी हरकतें करने लगा। कभी रात में घर से भाग जाता, कभी लोगों से गाली-गलौज और मारपीट करता और कभी-कभी तो हाथ-पैर पटकते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगता। उसकी यह हालत देखकर घर वालों को लगा कि उस पर भूत-प्रेत का साया है। वे लोग कभी किसी तांत्रिक के पास तो कभी किसी और तांत्रिक के पास जाने लगे। तांत्रिक भी विभिन्न क्रिया-कर्म के नाम पर उनसे पैसे ऐंठ रहे थे। इन्हीं सब की वजह से उनके पास जो थोड़ी बहुत ज़मीन थी, उसका एक टुकड़ा भी बेचना पड़ा। तांत्रिक के पास 2-3 महीने तक भटकने के बाद भी जब कुछ आराम नहीं मिला तो थक हार के डॉक्टर के पास जाने को तैयार हुए। कुछ लोगों से विचार-विमर्श किया तो लोगों ने उन्हें इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज जाने की सलाह दी। वहाँ न्यूरोलॉजी विभाग से इलाज शुरू हुआ। इलाज का असर



कुछ दिनों में ही दिखने लगा। उसकी तबीयत में तेजी से सुधार हो रहा था। एक महीने के अंदर ही काफी हद तक ठीक हो चुका था। अब वह अपने रोज़मर्रा के काम भी खुद ही करने लगा था। पूरी तरह से ठीक होने के बाद उसने सऊदी अरब जाने का निर्णय लिया।

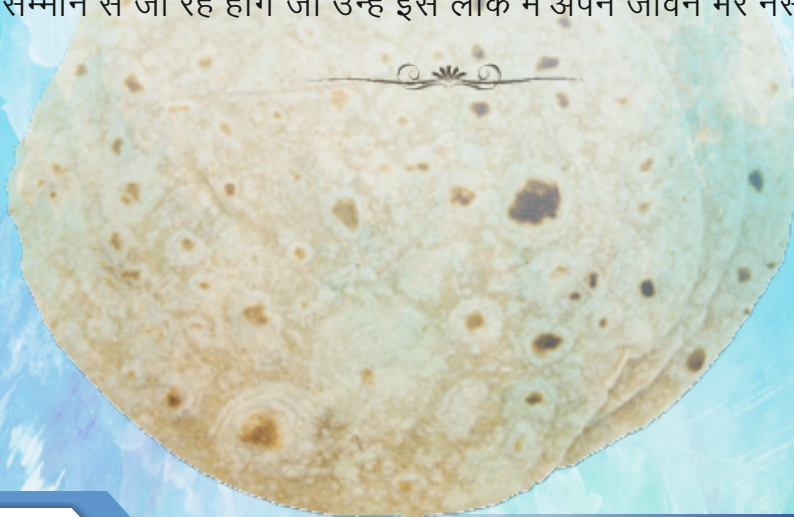
लोगों से पता चला कि वहाँ जाने के लिए वीज़ा, टिकट और मेडिकल में लगभग एक लाख तक का खर्च आएगा। रिश्तेदारों से उधार और कुछ लोगों से ब्याज पर कर्ज लेकर पैसों का इंतजाम हो गया। उसे खेती—बाड़ी और भेड़ पालन का वीज़ा मिला। शीघ्र ही वह सारी औपचारिकताएँ पूरी करके अपने गंतव्य अर्थात् सऊदी अरब पहुँच गया। वहाँ उसके कफ़ील अर्थात् मालिक का स्वभाव अच्छा नहीं था, वह उससे तय काम के अतिरिक्त अपने घर का भी काम करवाता था। खाने—पीने की व्यवस्था ठीक नहीं होने तथा अधिक काम के कारण वह बीमार रहने लगा। वह काफी कमजोर हो गया था और उसके पैर में बहुत दर्द होने लगा था। उसे चलने फिरने में दिक्कत हो रही थी। इतनी समस्याओं के बावजूद वह चाहता था कि जितना पैसा यहाँ आने में लगा है उसे कमा कर ही जाऊंगा। सऊदी अरब में इलाज की अच्छी सुविधा नहीं होने से उसने कफ़ील से इलाज के लिए हिंदुस्तान जाने की अनुमति मांगी। कफ़ील ने लगभग एक वर्ष बाद उसे हिंदुस्तान जाने की अनुमति दे दी। जल्द ही वह अपने घर वापस आया और इलाज शुरू किया। घर वालों के देखभाल और इलाज के बाद वह जल्दी ही ठीक हो गया। ठीक होने के बाद वह सऊदी अरब वापस नहीं गया। यहीं पर वह अपने छोटे भाई लल्लू के साथ पेंटिंग का काम करने लगा। लल्लू घर में सबसे छोटा था। वह एक नंबर का आलसी और कामचोर था। उसे नशे की लत थी। नशे की हालत में उसकी अक्सर लोगों से कहासुनी होती रहती थी। घर में भी उसका व्यवहार ठीक नहीं था। उसकी इन्हीं सब आदतों की वजह से उसे काम भी कम मिलता था। उसकी आदतों से परेशान होकर घर वालों ने उसकी शादी करने का फैसला किया। उनका विचार था कि शादी के बाद ज़िम्मेदारी आएगी तो शायद वह सुधर जाए। जल्दी ही उसकी शादी हो गई किन्तु शादी के बाद भी उसकी आदतों में कोई बदलाव नहीं आया। उसकी पत्नी झगड़ालू प्रवृत्ति की थी। उसके आने के बाद घर में झगड़े और बढ़ गए। झगड़ों की वजह से जल्दी ही उन दोनों को परिवार से अलग कर दिया गया। अलग होने के कुछ दिन बाद वह अपनी पत्नी के साथ चंडीगढ़ चला गया और वहीं पेंटिंग का काम करने लगा। उसकी पत्नी भी किसी कोठी में साफ—सफ़ाई का काम करने लगी।

सरपंच काका के तीनों बच्चे ठीक ठाक कमा रहे थे लेकिन वे उन्हें दैनिक खर्चों के लिए पैसे नहीं देते थे। बच्चे और बहुएँ अक्सर उनसे झगड़ा करतीं। बड़ा बेटा तो कभी—कभी शराब के नशे में उनसे मार—पीट भी करता था। उनका जीवन यापन बहुत मुश्किल से हो रहा था। जीवन के संघर्ष, परेशानियों



और खान-पान ठीक न होने के कारण वे काफी कमजोर हो गए थे। उन्हें दमा की बीमारी हो गई। इन सब के बावजूद वे अब भी अपना पुश्तैनी काम करके किसी तरह जीवन-यापन कर रहे थे। वे अपनी पत्नी के साथ बांस की वस्तुएँ बनाते और बाजार के दिन साइकिल से जाकर उसे बेच आते थे। जो पैसा मिलता उससे अपना गुज़र-बसर कर रहे थे। उनका जीवन-यापन बमुश्किल से हो रहा था। एक दिन जाड़े की रात में अचानक उनके सीने में तेज दर्द उठा, वे दर्द की वजह से छटपटा रहे थे। उनकी पत्नी ने देखा तो वह घबरा गई। बगल में बैठकर उनके सीने को सहलाने लगी। दर्द कम नहीं हुआ तो आस-पड़ोस के लोगों को मदद के लिए बुलाने दौड़ी किन्तु जब तक वे लौटी सरपंच काका के प्राण पखेरू उड़ चुके थे। उनके देहांत की ख़बर उनके बच्चों को दी गई। आसपास के गांवों में जिसे भी उनके देहावसान की ख़बर मिली, वो उनकी अंतिम यात्रा में शामिल हुआ। छोटे बेटे के आने के बाद दूसरे दिन उनका अंतिम संस्कार किया गया। अंतिम संस्कार के बाद तेरहवीं भी धूमधाम से की गई। तेरहवीं में उनके पसंद के व्यंजन बनवाए गए। उनकी एक बड़ी सी तस्वीर फ्रेम करवाई गई जिसपर माल्यार्पण किया गया।

सरपंच काका, जो जीवनपर्यंत अपनी जीविका और दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करते रहे, उनके मरने के बाद गाँव और पड़ोस के लोग उनकी तेरहवीं की दावत उड़ा रहे थे। जो बच्चे 5 मिनट बैठकर उनसे प्यार से बात तक नहीं करते थे वे उनके मरने के बाद उनकी फोटो पर माल्यार्पण कर रहे थे। जो बच्चे उनसे मारपीट करते थे, मरने के बाद उनकी तारीफों के पुल बांध रहे थे। यही इस संसार की रीति है। वक्त रहते लोग अपने लोगों को गुरबत में मरने देते हैं, उसके बाद उसे याद करके लोगों की दावत करते हैं ताकि उसका परलोक सुधार सकें। अगर यही व्यवहार उसके साथ जीवित रहते किया गया होता तब फिर उसके लिए यहीं परलोक भी होता। अगर परलोक जैसा कुछ होगा तो सरपंच काका जरूर वहाँ उसी सम्मान से जी रहे होंगे जो उन्हें इस लोक में अपने जीवन भर नसीब नहीं हुआ।



आयुर्वेद और स्वास्थ्य



श्री सतीश राय
वरिष्ठ लेखाकार

भारतीय पद्धति द्वारा प्राकृतिक उपचार में सूर्य चिकित्सा, अग्नि चिकित्सा, मंत्र चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, जल चिकित्सा, स्पर्श चिकित्सा के साथ-साथ आयुर्वेद चिकित्सा से भी लोगों का उपचार होता था। आयुर्वेद एक ग्रंथ है जिसमें रोग नाशक और प्रतिरोधक दवाओं के बारे में बताया गया है। इंसान को स्वस्थ रखने में सात्विक भोजन का भी महत्व है। इसका उल्लेख भगवत गीता में मिलता है।

जितना धन आज तक एलोपैथी के रिसर्च पर खर्च हुआ है उसका आधा खर्च भी यदि भारतीय उपचार पद्धतियों पर हुआ होता तो जिस प्रकार पेड़-पौधे अपना भोजन सूर्य से सीधे प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार इंसान भी अपने भोजन की एनर्जी सीधे सूर्य से प्राप्त करता और कई हफ्तों तक उसे खाने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

आयुर्वेद का वर्णन ऋग्वेद के अलावा चरक संहिता में भी मिलता है। महर्षि चरक द्वारा रचित ग्रंथ चरक संहिता में आयुर्वेद का विस्तृत उल्लेख किया गया है। चरक संहिता में शरीर के अंगों को मजबूत बनाने और रोगों से बचाव की औषधि बताई गयी है। चरक संहिता जीवन पद्धति सुधारने पर ज़ोर देता है। इसी तरह च्यवन एक ऋषि थे जिन्होंने जड़ी-बूटियों से च्यवनप्राश नामक एक औषधि बनाकर उसका सेवन किया तथा अपनी वृद्धावस्था से पुनः युवा बन गए थे। स्वस्थ व शरीर को निरोग रखने के लिए चरक संहिता में सोना, चाँदी, तांबा, लोहा जैसी धातुओं के भस्म का उपयोग किया जाता है। इसे शरीर चिकित्सा का विज्ञान भी कहते हैं।

आयुर्वेद में कहा गया है कि अच्छा खाएंगे तो अच्छा जीएंगे। सात्विक भोजन से उम्र बढ़ा सकते हैं। फलदार चीजें, हरी सब्जियों और संतुलित मात्रा में ड्राईफ्रूट के साथ खानपान पौष्टिक हो तो जीवन शानदार और निरोगी हो सकता है।

ज्यादा जीना चाहते हैं तो सात्विक और पौष्टिक भोजन कर अपनी उम्र 10 वर्ष तक बढ़ा सकते हैं। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भगवद्गीता में भोजन के बारे में बताया है। गीता में मनुष्य के तीन व्यवहारों का वर्णन है। सात्विक आचरण में भक्ति और अनुशासन का भाव जागृत होता है।



सात्विक भोजन पाचन को दुरुस्त करता इम्युनिटी बढ़ाता है, मानसिक ऊर्जा को बढ़ाता है। यह शरीर और मन के बीच स्वस्थ संतुलन बनाता है।

राजसिक भोजन में नमकीन और मसालेदार भोजन शामिल होते हैं। राजसिक व्यवहार में मनुष्य के मस्तिष्क में लालसा और अति उत्साह का स्तर बढ़ जाता है जबकि तामसिक आचरण में कुंठा, ईर्ष्या जैसी बुराइयाँ इंसान को बस में कर लेती हैं। तामसिक भोजन इंसान में पशु वृत्ति को बढ़ाता है।

गीता में कड़वा, खट्टा और तला-भुना खाने से परहेज करने को कहा गया है। इनसे तामसिक विचारों को बढ़ावा मिलता है। इसी तरह वैदिक उपवास में जल, फल, दही, दूध जैसे सात्विक आहार में शरीर के विषैले पदार्थ निकल जाते हैं। सात्विक भोजन के साथ स्पर्श, ध्यान, योग करने से शरीर स्वस्थ एवं निरोगी बनाता है। इम्युनिटी पावर ज्यादा शक्तिशाली होती है।

आजकल लोग अपनी जीभ के वश में हो गए हैं। तभी तो लोग पौष्टिक खाना नहीं बल्कि स्वादिष्ट खाना खा रहे हैं। मल्टीनेशनल कंपनियाँ अनहेल्दी खाना खिला रही हैं। इससे शरीर कमजोर और बीमारियों की वजह बन रहा है।

आयुर्वेद में 'आयु' का अर्थ 'उम्र' और 'वेद' अर्थात् 'ज्ञान'। यानी 'आयु का वेद' या 'जीवन विज्ञान'। यह विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति में से एक है। इसे भारतीय आयुर्विज्ञान भी कहा जाता है। इसका उद्देश्य ही जीवन को निरोग रखने, बीमारी होने पर ठीक कर आयु बढ़ाने से है। आयुर्वेद में भी सर्जरी होने का प्रमाण मिलता है। राजा दक्ष के धड़ में बकरे का सिर जोड़ा गया था। पहले का विज्ञान आज के विज्ञान से बहुत आगे था। अब पुनः इस पर रिसर्च होना जरूरी है।

भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों का मुख्य उद्देश्य है जब तक लोग जिंदा रहे स्वस्थ और निरोग रहे। आज 50 वर्ष से ऊपर 55 प्रतिशत लोग बी.पी., शुगर, हार्ट के रोगी हैं। 60 वर्ष के ऊपर पहुँचते-पहुँचते 80 प्रतिशत लोग असाध्य रोगों से ग्रसित हो जाते हैं और एलोपैथी दवाओं के बल पर जिंदा रहते हैं।

भारतीय संस्कृति की सबसे ज्यादा क्षति 16वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक हुई जिसके कारण भारतीय सभ्यता और प्राकृतिक उपचार 20वीं शताब्दी में धरातल पर पहुँच गया। इसी का परिणाम है कि लोग पाप करने, झूठ बोलने, हिंसा करने व पशु-पक्षियों को सताने में ज़रा भी नहीं सोचते। भारतीय संस्कृति के अनुरूप पहले जैसा बनाने में यदि आज शुरू करें तो 50 वर्ष से अधिक समय लग सकता है।

भारतीय समाज में विलुप्त होते रिश्ते



श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाकार

भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी। पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे। परिवार में कम से कम 8-10 सदस्य होते थे। हालांकि जीवन में उस समय कुछ अभाव भी था फिर भी आनंद सौ गुना था। बड़े-छोटे सभी का सम्मान था। लोग एक-दूसरे का आदर करते थे। परिवार के सदस्य एक-दूसरे को पदनाम से संबोधित करते थे जैसे दादा, चाचा, भईया, बुआ, फूफा, मौसा आदि। उस समय शिक्षा व्यवस्था पर कोई भार नहीं था। बड़े भाई की किताब से छोटा भाई बिना किसी संकोच के पढ़ लेता था। धीरे-धीरे संयुक्त परिवार टूटते गए और गाँव से लोग शहरों के तरफ पलायन करने लगे। शहरों की चकाचौंध को देखकर धीरे-धीरे लोग अपने को भूलने लगे।

धीरे-धीरे समय परिवर्तित होने लगा। अर्थ का युग शुरू हुआ। परिवार छोटे होने लगे। शिक्षा व स्वास्थ्य पर भार बढ़ने लगा। छोटे-छोटे बच्चों की स्कूली व्यवस्था को ठीक करने में माँ-बाप चिंतित रहने लगे। पहले समय में स्नातक स्तर तक का जो खर्च आता था, वह आज के समय में शायद कक्षा 1 के बच्चे पर खर्च हो जाता है। माँ-बाप सिर्फ अपने बच्चे पर ध्यान देने लगे हैं। धीरे-धीरे परिवार के अन्य रिश्ते बेमानी लगने लगे हैं। यहाँ तक कि अपने माँ-बाप के लिए समय और धन देना बोझ लगने लगा है। बचपन में बच्चे अपने दादा-दादी की गोद में पले-बढ़े। उस समय माँ-बाप को अपने बच्चों की चिंता नहीं रहती थी। घर के बड़े जैसे दादा, ताऊ, चाचा, आदि लोग खेल-खेल में बच्चों को इतना कुछ संस्कार और शिक्षा दे देते थे कि स्कूल के अध्यापकों के लिए यह नामुमकिन था। बड़े-बुर्जगों से शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक कहानियाँ और संस्कार मुफ्त में मिल जाया करते थे।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है लेकिन इतना परिवर्तन कि हम अपनी संस्कृति और संस्कार ही भूल जाए जिससे हमारी पहचान हुआ करती थी। पहले समय में घर के सदस्य रिश्तों में प्रणाम, चरणस्पर्श आदि का संबोधन था और बड़े लोगों की तरफ से प्रति उत्तर में आशीर्वाद, चिरंजीवी भवः, दीर्घायु, यशस्वी हो जैसे शब्द निकलते थे। परंतु आज की पीढ़ी के लिए शायद दूसरों को सम्मान देने के लिए सिर्फ चंद शब्द ही शेष रह गये हैं। जो भारतीय संस्कृति के न होकर पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हैं। जैसे गुड



मार्निंग सर, गुड मार्निंग अंकल / आंटी आदि। प्रति उत्तर में उन्हीं शब्दों की पुनरावृत्ति होती है जैसे गुडमार्निंग / गुड मार्निंग बेटा, इसका मूल कारण संयुक्त परिवार का विघटन होना है। आज के युग में मानव अर्थ के पीछे भाग रहा है। पति-पत्नी दोनों अर्थ की व्यवस्था में लगे हुए हैं। बच्चों को आया पाल रही है। ऐसी स्थिति में बच्चों के अंदर संस्कार का होना नामुमकिन है और ऐसे बच्चे आगे चलकर अपने माँ-बाप को समय न देकर उन्हें ओल्ड एज होम में शिफ्ट कर रहे हैं। संयुक्त परिवार में ओल्ड एज होम की व्यवस्था नहीं थी। संयुक्त परिवार में इतने सदस्य होते थे कि सबको समय और सम्मान मिल जाता था।

आने वाले समय में चाचा, ताऊ, मामा, फूफा, बुआ, मौसा, मौसी आदि रिश्ते विलुप्त प्रजाति के कहलाएंगे और ये संग्रहालयों में संजोकर रखे जाएंगे और सिर्फ अंकल-आंटी ही रहेंगे। इसको इस प्रकार से समझा जा सकता है। जैसे यदि किसी के दो पुत्र और दो पुत्री हैं तो उसके पास सभी रिश्ते मौजूद होंगे और यदि दो पुत्र एक पुत्री हैं तो रिश्ते में मौसी नहीं रहेगी और यदि एक पुत्र तथा दो पुत्री रहेगी तो चाचा, ताऊ के रिश्ते नहीं रहेगें और यदि एक पुत्र व एक पुत्री हैं तो चाचा, ताऊ, मौसी, नहीं होंगे। माता-पिता के बाद कोई रक्त संबंध नहीं रहेगा।



मेरी जिंदगी के कुछ पल



सुश्री आकृति कुशवाहा
पुत्री— श्री अनूप कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

वैसे तो मैं सिर्फ सोलह साल की हूँ। मगर अपनी जिंदगी का एक पल आप सभी के साथ बाँटना चाहती हूँ।

यह पल उस समय का है जब मैं दसवीं कक्षा में थी यानी 2021-22 के दौरान। 9वीं का आखिरी इम्तिहान देते वक्त थोड़ा डर लग रहा था। मानो जैसे पता हो आगे आने वाला साल कैसा जाएगा! मगर उत्सुकता भी थी कि 10वीं कक्षा में जा रही हूँ। पहली बार ऑल इन्डिया एग्जाम दूँगी। डर तो था और वो डर जायज़ भी था।

मुझे अच्छे से याद है जब मैं आखिरी पेपर लिख रही थी 9वीं का। वो आखिरी पेपर अंग्रेजी का था जो एक घंटे में पूरा करके मैंने पूरा एक घंटा 10वीं के बारे में सोचा था क्या होगा? कैसे होगा? कब होगा? इन सब सवालों के जवाब तो नहीं मिले थे मुझे मगर एक हौसला आ गया था, जिससे हिम्मत मिली मुझे आगे बढ़ने की। दिन बीतने लगे। 9वीं का रिज़ल्ट आया। रिज़ल्ट अच्छा था। फिर हो गया 10वीं में एडमिशन। यहाँ तक भी सब ठीक था, मगर मेरे पापा ने जब 10वीं की किताबें मेरे सामने रखी तो मुझे सिर्फ उन्हें देखकर डर लगने लगा। एक बार तो लगा कि नहीं हो पाएगा। थोड़ा पढ़ने के बाद लगा कि हो जाएगा या साफ कहूँ तो यह लगा कि कर लूँगी क्योंकि करना तो था ही चाहे जैसे भी करूँ।

लेकिन इस बीच मेरा एक दुश्मन भी था। मेरा क्या, देखा जाए तो वह सभी का दुश्मन था। और वो कोई और नहीं 'कोरोना' ही था जिसने सबकी जिंदगी बेहाल कर दी थी। बच्चे से लेकर बूढ़े तक इससे परेशान थे। तो मैं तो ठहरी 10वीं की छात्रा। मेरा डरना तो वाज़िब ही था क्योंकि मेरी नवीं कक्षा पूरी ऑनलाइन ही चली थी और 10वीं भी ऑनलाइन ही चलनी थी। ये डर और खाए जा रहा था। कोरोना की वजह से न स्कूल जा पा रही थी, न कोचिंग खुली थी और न ही किसी को घर पर बुलाकर पढ़ सकती थी। जो था ऑनलाइन मीडिया ही था, अब उसमें भी अच्छा टीचर मिलना जैसे रेत में सुई ढूँढ़ने के समान होता है। कई शिक्षकों से पढ़ी, ठीक न लगने पर छोड़कर दूसरों को पकड़ा। फिर जाकर कोई दो-तीन महीने बाद दो ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जिनसे मैं जुड़ी।



कितनी रुकावटें आईं लेकिन बिना रुके बढ़ते रहना एक योद्धा और विद्वार्थी की पहचान है। मैं भी नहीं रुकी। लेकिन कभी दोस्तों की वजह से नहीं पढ़ पाती, कभी घर में हुई घरवालों की नॉक-झोंक से दिमाग का दही हो जाता था और कभी मैं खुद की वजह से भी नहीं पढ़ पाती थी। मेरी 10वीं की बोर्ड परीक्षा दो भागों में संपन्न हुई, टर्म-1 और टर्म 2। टर्म-1 की परीक्षा अच्छी नहीं हुई थी जिसके लिए रिजल्ट आने पर मैं खूब रोई थी। जबकी अपनी समझ में मैंने अच्छे से पढ़ाई की थी। यहाँ तक कि अपने बर्थडे वाले दिन भी पढ़ाई की थी। मगर रिजल्ट उस हिसाब से नहीं आया जैसा मुझे चाहिए था लेकिन घरवालों के समझाने पर रोना बंद करके आगे की तैयारी करने लगी क्योंकि टर्म -2 की परीक्षा और अधिक कठिन होने वाली थी। मैंने इतनी लगन से पढ़ाई की थी। रात में तीन बजे तक जगकर पढ़ती थी। फिर सुबह उठकर पढ़ती थी। उस समय मुझे किसी शिक्षक या ऑनलाइन सहायक की जरूरत नहीं थी। जरूरत थी तो सिर्फ नींद की, थोड़ी सी नींद क्योंकि जब सोने जाती थी तो टेंशन से नींद नहीं आती थी, फिर उठकर पढ़ने लगती थी। मेरा पढ़ना जायज़ था और जरूरी भी।

जब मैं अपना पहला पेपर लिखने गई थी तो मुझे याद है कि पापा के साथ गई थी और लिखते वक्त जब मैंने कलम उठाया था तब मेरे हाथ काँपने लगे थे। आँखों में आँसू थे। पता नहीं क्यों डर लग रहा था। जितना पढ़ा था, सब भूल गई थी। मैंने एक लंबी साँस ली और पेपर को दोबारा पढ़ा, भगवान का नाम लिया और भर दिया पूरा पेपर। जो आता था वो लिख दिया और जो नहीं आता था वो भी लिख दिया।

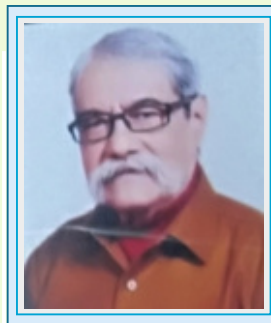
अब मेरा डर खत्म हो गया था। मैंने सारे पेपर दे दिए थे। अब रिजल्ट का इंतज़ार था और मुझसे ज्यादा मेरे रिश्तेदार मेरे रिजल्ट का इंतज़ार था। जिस दिन मेरा रिजल्ट आया उस दिन मैं स्कूल में थी। मुझे याद है कि सबसे पहले मैंने अपना रिजल्ट अपने चाचा को भेजा था, दादाजी मेरे साथ थे लेकिन उनको तब नहीं बताया। उसके बाद मैंने रिजल्ट अपने पापा को भेजा था। वे बहुत खुश हो गए थे और मम्मी को सरप्राइज देने के लिए पहले उनको बताया कि रिजल्ट अच्छा नहीं है। फिर घर आने पर उनको सामने से बताया। उस दिन मैंने अपनी माँ के आँखों में मेरे लिए खुशी के आँसू देखे। मुझे भी बहुत खुशी हुई थी उस दिन। उस समय मेरे चाचा की शादी भी थी मगर रिजल्ट आने से पहले सबके चेहरे पर एक टेंशन सी थी लेकिन रिजल्ट आ जाने के बाद मानो सबकी खुशी दोगुनी हो गई थी और सबसे ज्यादा मेरी। मैंने बहुत मेहनत की थी। वो मेहनत मेरे मम्मी-पापा के चेहरे पर खुशी के रूप में प्रकट हुई।...



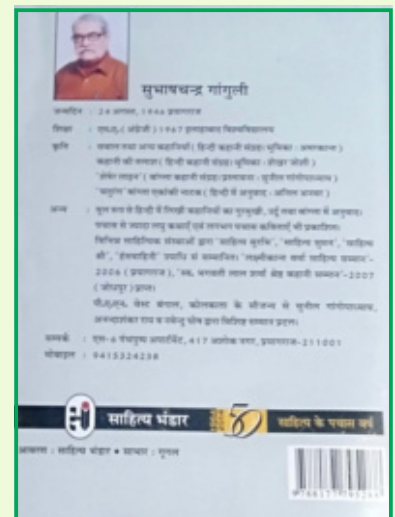
कार्यालय महालेखाकार के भूतपूर्व
वरिष्ठ लेखाधिकारी सुभाषचन्द्र गांगुली को
उनके नवीनतम कहानी संग्रह 'मोक्षदायिनी'
के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा
2021 का नरेश मेहता सर्वना पुरस्कार
प्रदान किया गया।

कथाकार गांगुली जी को उनके
हिन्दी में योगदान के लिए हिन्दी दिवस-
2022 को सम्मानित किया गया।

सुभाषचन्द्र गांगुली
21.9.22



श्री सुभाषचंद्र गांगुली
भूतपूर्व वरिष्ठ लेखाधिकारी



राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत उल्लिखित दस्तावेजों की सूची
LIST OF DOCUMENTS UNDER SECTION 3 (3) OF OFFICIAL LANGUAGE ACT, 1963

क्र. सं. Sl. No.	दस्तावेज का नाम Name of the Document
01	संकल्प / Resolutions
02	साधारण आदेश / General Orders
03	नियम / Rules
04	अधिसूचनाएँ / Notifications
05	प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट / Administrative & Other Reports
06	प्रेस विज्ञप्तियों / Press Communiques
07	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट / Administrative and Other Reports to be laid before a House or the Houses of Parliament
08	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागजपत्र / Official papers to be laid before a House or the Houses of Parliament
09	संविदाएँ / Contracts
10	करार / Agreements
11	अनुज्ञप्तियाँ / Licenses
12	अनुज्ञापत्र / Permits
13	निविदा सूचनाएँ / Tender Notices
14	निविदा प्रारूप / Tender Forms

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुसार सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित है –

As per Section 3 (3) of the Official Languages Act, 1963 the following are covered in General Orders:

- (1) ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हो और जो स्थायी प्रकार के हो।
 - (2) ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हो या उनके लिए हो;
 - (3) ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हो या सरकारी कर्मचारियों के लिए हो।
- (1) All Orders, Decisions or Instructions intended for departmental use and which are of standing nature;
 - (2) All such Orders, Instructions, Letters, Memoranda, Notices, etc. related to or intended for group or groups of Government employees;
 - (3) All Circulars whether intended for departmental use or for Government employees.

नोट : अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों में ही तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

हिंदी पखवाड़ा 2022 की झलकियाँ



लेखा संगम



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth In Public Interest